मासिक

गुरमत ज्ञान

ISSN 2394-8485

३/-

चैत्र-बैसाख संवत् नानकशाही ५५६ अप्रैल 2024 वर्ष १७ अंक ८

प्रथम रहत यह जान खंडे की पाहुल छके।

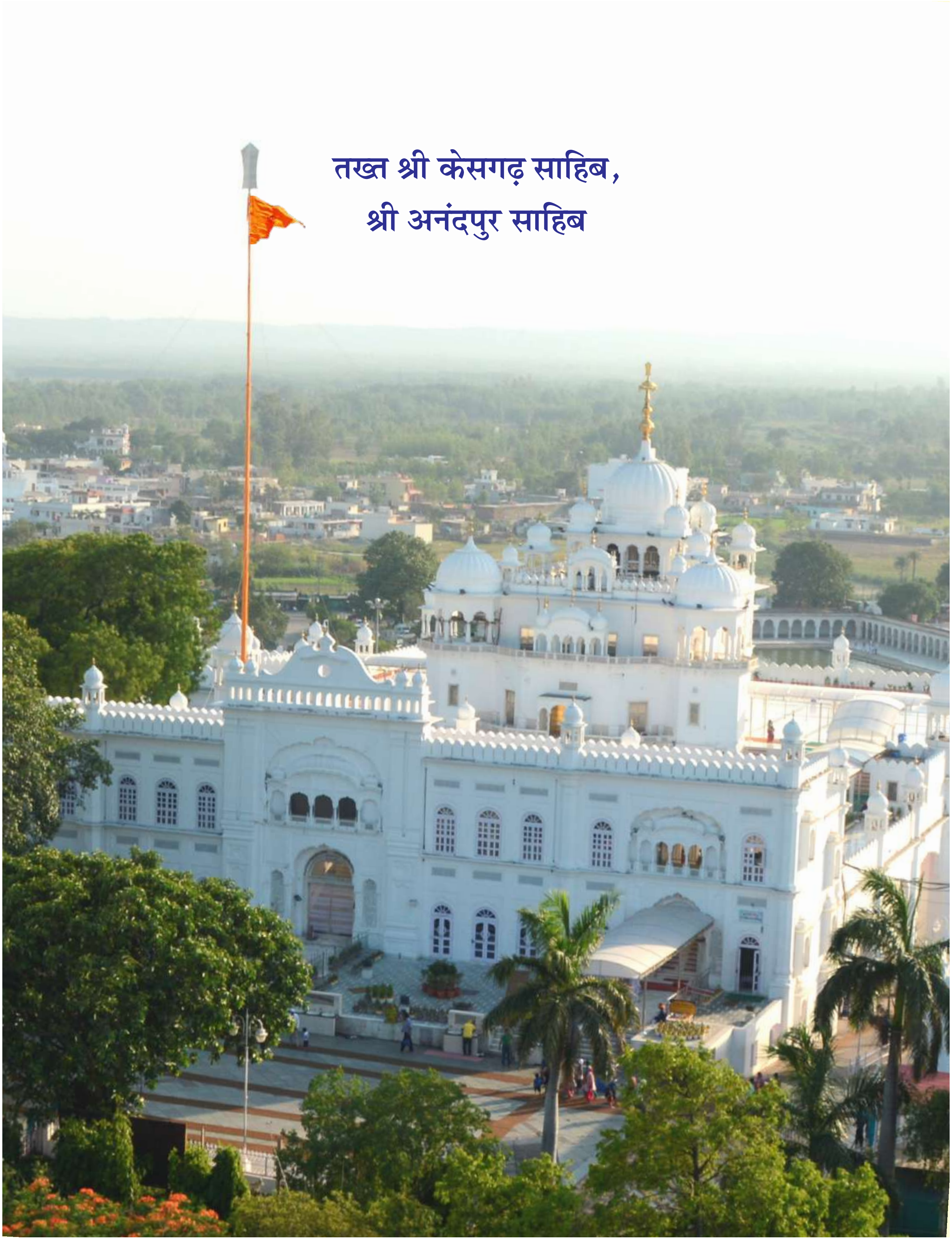
तख्त श्री केसगढ़ साहिब,
श्री अनंदपुर साहिब

ੴ सतिगुर प्रसादि॥
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक
गुरमत ज्ञान

चैत्र-बैसाख संवत् नानकशाही 556
वर्ष 17 अंक 8 अप्रैल 2024

संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब -143006
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4
संपादकीय 5
भक्त धंना जी : जीवन और बाणी 8
-डॉ. गुलजार सिंघ ज़हूरा
खालसा को अपराजेय बनाता है : अमृत 13
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ
आदर्श जीवन का प्रण : पाँच ककारी रहित 17
-सतविंदर सिंघ फूलपुर
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ 24
-डॉ. परमजीत कौर
श्री अनंदपुर साहिब : . . . 29
-डॉ. परमवीर सिंघ
तख्त श्री दमदमा साहिब और बैसाखी का पर्व 33
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'
साका तरनतारन साहिब : अकाली लहर . . . 35
-स. हरविंदर सिंघ खालसा
. . . . भाई भाना जी और भाई मथरा जी 40
-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल
कविताएं 43
-डॉ. मनजीत कौर
खबरनामा 44

गुरबाणी विचार

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३ ॥ (पन्ना १३३)

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में बैसाख मास के वातावरण एवं मौसम तथा इसमें की जाने वाली क्रियाओं की सांकेतिक पृष्ठभूमि में मनुष्य-जीवन रूपी इस कालखंड को प्रभु-नाम-सिमरन द्वारा उपयोग में लाने तथा सफल करने का गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि वैसाख मास में भले ही जनसाधारण की ख्वाहिशें-उमंगें फलीभूत होती हों परंतु इस मास में भी उन जीव-स्त्रियों का हृदय धैर्य धारण नहीं कर सकता जो कि प्रभु-भक्ति अथवा प्रभु-प्रेम से दूर हैं। परमात्मा ही आत्मा का मित्र है और अज्ञानतावश उसी एकमात्र मित्र को भुला देने से धैर्य प्राप्त नहीं किया जा सकता, क्योंकि उसको सांसारिक माया ने अपनी तरफ आकर्षित कर लिया है।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि न पुत्र, न स्त्री और न धन ही मनुष्य का साथ देता है। साथ देने वाला तो सदैव स्थिर प्रभु ही है, लेकिन दुखदायक स्थिति यह है कि कुछ एक चुनिंदा गुरमुखों को छोड़कर समस्त संसार मोह या सांसारिक लगाव के व्यवसाय में खचित होकर आत्मिक मृत्यु को प्राप्त हो रहा है। ऐसा संसार इस रहस्य को समझता नहीं कि मात्र प्रभु-नाम ही जीवन में काम आता है, शेष सांसारिक कार्य यहीं रह जाते हैं अर्थात् वे आत्मिक जीवन का अंग नहीं बन पाते। प्रेम-स्वरूप प्रभु को भुलाकर सब कुछ बर्बाद होना निश्चित है, क्योंकि उसके बिना कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है।

पंचम पातशाह चुनिंदा गुरमुखजनों की स्थिति दर्शाते हुए कथन करते हैं कि जो जन प्यारे प्रभु के चरणों के साथ जुड़ गए हैं अथवा उसकी प्रेमा-भक्ति में रत हो गए हैं उनकी शोभा निर्मल है। विनती है कि हे प्रभु ! हमें अपने साथ मिला लो, क्योंकि बैसाख रूपी जीवन-खंड सुहावना तभी है जब पूर्ण संत अथवा सतिगुरु के साथ भेंट हो जाए और वह प्रभु के साथ मिलाप का सबब बना दे।

संपादकीय

आइए, खालसाई आदर्श के धारक बनें!

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा पंथ की सर्जना अकाल पुरख के बड़े मिशन की पूर्ति थी। इस धरती पर सम्पूर्ण मनुष्य की सृजना के लिए 'नानक निर्मल पंथ' की 'खालसा पंथ' के रूप में सम्पूर्णता थी।

'खालसा पंथ' 'प्रभु का पंथ' था, जिसके अनुयायियों ने धार्मिक जगत में हर प्रकार की बिचोलगी से मुक्त होकर अकाल पुरख के साथ सीधा सम्बंध स्थापित करना था। इस पंथ ने एक अकाल का पुजारी बनकर मानवता की अगुआई भी करनी थी, क्योंकि पहले बहुत-से मध्यस्थ इस मकसद में असफल हो चुके थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी 'बचित्र नाटक' में पूर्व के हालात और अपने मिशन के बारे में लिखते हैं :

पेड पात आपन ते जलै ।।प्रभ कै पंथ न कोऊ चलै ।।१५।।
जिनि जिनि तनिक सिद्ध को पायो ।।तिन तिन अपना राहु चलायो ।।...
सभ अपनी अपनी उरझाना ।।पारब्रहम काहू न पछाना ।।... २८।।६।।

धार्मिक नेताओं द्वारा मानवता का सही मार्गदर्शन नहीं किया जा रहा था, अत: समाज में गिरावट आ चुकी थी । श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को धरती पर भेजकर अकाल पुरख की मंशा ऐसा पंथ स्थापित करने की थी जो जात-पांत के भेदभाव से ऊपर उठकर मानव समुदाय की सेवा के लिए तत्पर रहे, जो गुरबाणी में आए 'बेगमपुरा' के संकल्प को धरती पर व्यवहारिक रूप प्रदान कर सके, जो धरती धर्मसाल की स्थापना के लिए असुरों का संहार कर सके, दुर्जनों (बदी) का नाश कर सके, धर्मियों के लिए हर प्रकार के संकट निवृत्त कर सके। इस मंतव्य की पूर्ति के लिए गुरु साहिब कहते हैं कि अकाल पुरख ने मुझे धरती पर जाकर 'पंथ' स्थापित करने का हुक्म दिया :

तप साधत हरि मोहि बुलायो ।।इम कहि कै इह लोक पठायो ।।२८।।...
मै अपना सुत तोहि निवाजा ।।पंथ प्रचुर करबे कहु साजा ।।
जाहि तहां तै धरमु चलाइ ।।कबुधि करन ते लोक हटाइ ।।२९।।६।। (बचित्र नाटक)

अकाल पुरख के इस मिशन के तहत कलगीधर पिता जी ने १६९९ ई. की बैसाखी को श्री अनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की सर्जना की । भारतीय समाज में सदियों से दबे-कुचले, दुत्कारे जा रहे लोगों को पहली बार श्री गुरु नानक पातशाह ने गले से लगाया तथा ''*जिथै नीच*

समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस'' का आदर्श विचार प्रस्तुत किया । इसी विचार को कलगीधर पिता ने :

नाम गरीब निवाज़ हमारा । है जग में प्रसिध अपारा ।
सो सफला जग मैं तब थै हैं । लघु जातन को बडपन दै हैं । (पंथ प्रकाश)

द्वारा तथाकथित जाति-अभिमानी निठल्ले वर्ग को नकार कर, परिश्रमी लोगों को पातशाही सौंप कर श्रम प्रधान तथा विलक्षण पंथ-- 'खालसा पंथ' की सर्जना की। गुरु जी ने खालसा पंथ की सर्जना के समय एक बाटे में से सभी को खंडे की पाहुल छकाकर जाति, वर्ण के विभाजन को पूर्णत: खत्म कर दिया। दूसरा, पांच प्यारों से खंडे-बाटे की पाहुल लेकर 'गुरु चेले' के अंतर को सदैवकालीन के लिए मिटाकर 'गुरु चेला, चेला गुरु' का विलक्षण मॉडल मानवता के समक्ष पेश किया। गुरु-चेले का आपस में अभेद होना आने वाले समय में किसी बड़ी जिम्मेदारी का प्रतीक था।'' *. . . तिन तिन अपना राहु चलायो* ''वाली सामाजिक गिरावट को सदा के लिए दूर कर अब खालसे ने अपनी अगुआई खुद करनी थी और सारी मानवता की अगुआई करने के भी योग्य बनना था, इसलिए खालसे के उच्च इखलाक वाली रहित मर्यादा निर्धारित कर खालसे को धरती का सम्पूर्ण मनुष्य निर्मित किया गया। इसने अब तक की धार्मिक भ्रांतियों, वहमों-भ्रमों, विप्रवादी रीतियों से खुद मुक्त होकर जनसाधारण को मुक्त करना था। तभी खालसा कहलाना था :

खालसा खास कहावै सोई । जा के हिरदे भरम न होई ।
भरम भेख ते रहै निआरा । सो खालस सतिगुरू हमारा । (श्री गुर सोभा)

मानवाधिकारों की रक्षा हेतु गुरु साहिबान द्वारा दी गई शहादत की रीति को भी अब खालसे ने आगे बढ़ाना था, क्योंकि गुरु-चेले में अभेद हो गया था। खालसे ने यह जिम्मेदारी भी बाखूबी निभाई। सिक्ख पंथ का कुर्बानियां भरा इतिहास इस बात का साक्षी है कि खालसा पंथ ने धर्म, देश, कौम की रक्षा हेतु बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने से संकोच नहीं किया।

सदियों से परतंत्रता की जंजीरों में जकड़े भारतीय समाज को खालसा पंथ ने ही स्वतंत्रता दिलाई। खालसा पंथ ने विश्व भर में बहादुरी की अत्यंत मिसालें कायम की हैं । १८९७ ई. में सारागढ़ी की जंग फतह करने वाला, १९४८ ई. में कश्मीर की पहाड़ियों पर डटने वाला, १९९९ ई. में कारगिल की जंग जीतने वाला, १९६२, १९६५ तथा १९७१ ई. की जंग में देश की इज्ज़त बचाने वाला कलगीधर पिता का खालसा पंथ ही था, जिसने अमृत की शक्ति को प्रत्यक्ष रूप से साबित कर दिखाया।

यह भी कलगीधर पिता जी की बख़्शिश है, जिन्होंने खालसा पंथ साज कर सदियों से भारत में

कमजोर समझे जा रहे स्त्री वर्ग में स्वाभिमान पैदा कर उसको जुल्म के विरुद्ध संघर्षशील होने के लिए तैयार किया। इस प्रकार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सृजित खालसा पंथ धरती पर एक तरह का इन्कलाब था, जिसने सदियों की कायरता को खत्म कर गौरवशाली जीवन जीने की शिक्षा प्रदान की।

अत: आवश्यकता है, खालसा पंथ का साजना दिवस मनाते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा निर्धारित खालसाई आदर्श को समझकर, खंडे-बाटे की पाहुल छककर, करनी प्रधान जीवन जीते हुए विश्व के समक्ष आदर्श मिसाल पैदा की जाए, ताकि समूचे विश्व को रूहानियत एवं शांति वाले पथ पर ले जाया जा सके, जिससे "ना को बैरी नहीं बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई" वाली भ्रातृ-भावना पैदा हो सके, द्वेष की भावना खत्म की जा सके, विश्व स्तर पर पैदा हो रही पंथ-विरोधी चुनौतियों का सामना किया जा सके।

फार्म-४, नियम-८

१. प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
२. प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की सात तारीख
३. मुद्रक का नाम	:	स. मनजीत सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
४. प्रकाशक का नाम	:	स. मनजीत सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
५. संपादक का नाम	:	स. सतविंदर सिंघ
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	संपादक, गुरमत ज्ञान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब
६. मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब

मैं सतविंदर सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी के अनुसार पूर्णत: सही है।

तारीख-०७/०४/२०२३

हस्ताक्षर/-

(सतविंदर सिंघ)

संपादक, गुरमत ज्ञान।

भक्त धंना जी : जीवन और बाणी

-डॉ. गुलजार सिंघ ज़हूरा (दिवंगत)

भक्त धंना जी किसानी परिवार से सम्बन्धित राजपूताने के जट्ट (जाट) थे। भाई कान्ह सिंघ नाभा[१] के अनुसार आपका जन्म जिला टांक के गाँव धुआन में संवत् १४७३ ई. में हुआ। मैक्स आर्थर मैकालिफ [२] जन्म का सन् १४१५ ई. निर्धारित करता है जो उपरोक्त संवत् के साथ मेल खाता है। कुछ विद्वान भक्त धंना जी की पृष्ठभूमि जयपुर ज़िले के गाँव डिगी किशनगढ़ से बताते हैं और यहाँ से ही आपके पूर्वज धुआन (बड़ा धुआँ) जा बसे थे। [३] भक्त धंना जी ने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया और खेती करने तथा पशु-पालन एवं कृषि-कार्य के साथ-साथ प्रभु-भक्ति की तरफ भी अपना मन लगाए रखा। प्रभु-प्रेम की प्रबल इच्छा होने के कारण परमात्मा को उन्होंने अपने निश्छल स्वभाव के माध्यम से सहजावस्था में पा लिया था। श्री गुरु अरजन देव जी बसंत राग की भक्तों की साखी में जहाँ अन्य भक्तों की कठिन साधना का ज़िक्र करते हैं, वहीं सतिगुरु जी ने ''धंनै सेविआ बाल बुधि'' के माध्यम से उनके प्रभु-मिलाप का वर्णन किया है।

भक्त धंना जी के जीवन के भक्ति-भाव के साथ अनेक साखियाँ जुड़ी हुई हैं। भाई गुरदास जी अपनी वारों में इस प्रकार बयान करते हैं :

बाम्हणु पूजै देवते
धंना गऊ चरावणि आवै।
धंनै डिठा चलितु एहु पूछै
बाम्हणु आखि सुणावै।
ठाकुर दी सेवा करै जो
इछै सोई फलु पावै।
धंना करदा जोदड़ी
मै भि देह इक जे तुधु भावै।
पथरु इकु लपेटि करि दे
धंनै नो गैल छुडावै।
ठाकुर नो न्हावालि कै
छाहि रोटी लै भोगु चढ़ावै।
हथि जोड़ि मिनति करै
पैरी पै पै बहुतु मनावै।
हउ भी मुहु न जुठालसां
तू रुठा मै किहु न सुखावै।
गोसाई परतखि होइ रोटी खाहि
छाहि मुहि लावै।
भोला भाउ गोविंदु मिलावै।। (वार १०:१३)

भक्त धंना जी ने अपनी आत्मिक तृष्णा को मिटाने के लिए परमार्थ के रास्ते की तलाश में लंबा समय गुज़ारा था और दूर-दूर तक की

यात्रा की। शायद इसी तलब में आप जी ने अपना गाँव और घर भी त्याग दिया था। गाँव की पूरबी दिशा में शुष्क पहाड़ के पैरों में भक्त धंना जी की ज़मीन है, जहाँ चूना गच्च का एक चबूतरा बना हुआ है। कहते हैं कि यहाँ बैठ कर भक्त धंना जी गऊएं चराया करते थे। श्रद्धावान लोग यहाँ आते हैं।

भक्त धंना जी को परमार्थ की समझ भक्त रामानंद जी से प्राप्त हुई थी। भक्त रामानंद जी उत्तरी भारत में दक्षिण के रामानुज की चौदहवीं पीढ़ी के उत्तराधिकारी थे और निर्गुण भक्ति के प्रचारक भी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त-बाणी वाले लगभग आधे भक्त आपके शिष्य और समकालीन थे। 'भगतमाला' में भक्त रामानंद जी के भक्तों का ज़िक्र इस प्रकार किया गया है, जिसमें भक्त धंना जी का नाम भी शामिल है :

स्री रामानंद रघुनाथ जयो
दुनीआ सेतु जग तारन कीयो।
अनंत नंद, कबीर, सुखा,
सुरसय, पदमावती, नर हरि।
पीपा, भावानंद, रैदास, धंना,
सैन, सुरसारी की सरहरि।
और शिश प्रतिशट एक ते एक उजागर।[४]

'परची श्री सैण भक्त जी' में भी भक्त रामानंद जी के भक्तों का जो वर्णन आया है, उसमें भी भक्त धंना जी शामिल हैं :

धंना ते रविदास जी त्रिलोचन सधना जाण।
सूरदास घर नामदेव कीरतन कीता जाम।
(धनासरी पत्तरा)[५]

इस प्रकार भक्त धंना जी साधुओं की संगति के माध्यम से भक्त रामानंद जी की शरण में जाकर अपनी साधना के साथ शेष भक्त साहिबान में स्थान बना लेते हैं। इसका वर्णन चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी करते हैं :

नामा जैदेउ कंबीरु त्रिलोचनु
अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ।।
जो जो मिलै साधू जन संगति
धनु धंना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ।।७।।
संत जना की हरि पैज रखाई
भगति वछलु अंगीकारु करईआ।।
नानक सरणि परे जगजीवन
हरि हरि किरपा धारि रखईआ।। (पन्ना ८३५)

श्री गुरु अरजन देव जी ने भक्त धंना जी द्वारा आसा राग में उच्चारण किए शबदों में अपना एक शबद जोड़ कर उनकी भक्ति-भावना का सम्मान करते हुए फरमान किया है :

गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि
नामदेउ मनु लीणा।।
आढ दाम को छीपरो
होइओ लाखीणा ।।१ ।।रहाउ।।
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा।।
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ।।१ ।।
रविदासु ढुवंता ढोर नीति
तिनि तिआगी माइआ।।
परगटु होआ साधसंगि

हरि दरसनु पाइआ ।। २ ।।
सैनु नाई बुतकारीआ
ओहु घरि घरि सुनिआ ।।
हिरदे वसिआ पारब्रहमु
भगता महि गनिआ ।। ३ ।।
इह बिधि सुनि कै जाटरो
उठि भगती लागा ।।
मिले प्रतखि गुसाईआ
धंना वडभागा ।।४ ।। २ ।। (पन्ना ४८७)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त धंना जी के तीन शबद शामिल किए गए हैं। दो शबद राग आसा में 'आसा बाणी भगत धंने जी की' शीर्षकाधीन और एक शबद धनासरी राग में ''गोपाल तेरा आरता'' वाला है। प्रभु-महिमा गायन करते हुए भक्त धंना जी ने प्रभु के आगे रोज़मर्रा ज़िंदगी की ज़रूरतों का माँग-पत्र प्रस्तुत किया है।

आसा राग के प्रथम शबद में भक्त धंना जी ने अपने पूर्व जन्म की भटकना और प्रभु को प्राप्त करने की विह्वलता को बयान किया है। जीव की व्यक्तिगत और बहिर्मुखी साधना सारी की सारी मनमुखता है। जब तक गुरु की कृपा नहीं होती, तब तक प्रभु की प्राप्ति नहीं होती और न ही मन वश में आता है। अपनी इस मानसिक भटकना को बयान करते हुए आप फरमान करते हैं कि कई जन्म बीत गए, परन्तु तन, मन, धन द्वारा सहजावस्था नहीं आई। यह अवस्था आ भी नहीं सकती, क्योंकि तन नष्ट हो जाता है, मन भटकता रहता है और धन खर्च हो जाता है। इस भटकन के कारण को अनुभव करते हुए आप स्पष्ट करते हैं कि इस लोभी जीव को ज़हरीले स्वादों और काम के रंग में रंगे होने के कारण हीरे रूपी प्रभु विस्मृत था। इस बांवरे मन को ज़हर रूपी फल मीठे लगते थे। शुभ कर्मों से विपरीत मायावी प्रीति के वश होकर जन्म-मरण का ताना बुना और आवागमन का चक्कर चलता रहा। हृदय में परमात्मा के साथ जुड़ने की अच्छी योजना का टिकाव न होने के कारण यह जीव तृष्णा की आग में जलता हुआ मृत्यु के फन्दे में फंसा रहा। विषय-विकारों के रस इकठ्ठा कर मन को इस कद्र भर लिया कि परम पुरुष भूल ही गया। गुरु ने जब मन में ज्ञान का धन भर दिया तो मन सहज की तृप्ति में आ गया। यह युक्ति इस्तेमाल कर सब जगह समाई हुई प्रभु की ज्योति को हृदय में बसा कर न छले जाने वाले परमात्मा को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार भक्त धंना जी ने संत-जन के साथ मिल कर धरती को सहारा देने वाले धरणीधर को प्राप्त कर लिया। यह शबद जीव को परमार्थ की सही दिशा प्रदान करता है :

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने
तनु मनु धनु नही धीरे ।।
लालच बिखु काम लुबध राता
मनि बिसरे प्रभ हीरे ।। ३ ।। रहाउ ।।
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे

चार बिचार न जानिआ ।।
गुन ते प्रीति बढी अन भांती
जनम मरन फिरि तानिआ ।।१ ।।
जुगति जानि नही रिदै निवासी
जलत जाल जम फंध परे ।।
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे
परम पुरख प्रभ मन बिसरे ।।२ ।।
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ
धिआनु मानु मन एक मए ।।
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ
त्रिपति अघाने मुकति भए ।।३ ।।
जोति समाइ समानी जा कै
अछली प्रभु पहिचानिआ ।।
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु
मिलि जन संत समानिआ ।।४ ।।१ ।।

(पन्ना ४८७)

दूसरे शब्दों में आत्म स्थिरता का प्रकटीकरण है। इसमें यह तसल्ली प्रकट की गई है कि परमात्मा की भक्ति क्यों न की जाये जो प्रत्येक जीव को रोज़ी देता है! उसके बिना दूसरा अन्य कोई प्रतिपालक नहीं है। हे जीव! अगर तू ब्रह्मांड के विभिन्न देशों में भी दौड़ता फिरे तो भी जो प्रभु करेगा, वही होगा। इस शबद में दृष्टांत देकर बताया गया है कि परमात्मा ने माता के गर्भ में हमारा शरीर बनाया है और परमात्मा उस अग्नि में ख़ुराक देकर हमारी रक्षा करता है। इसी प्रकार मादा कछुआ खुद पानी में होती है और उसके बच्चे बाहर किनारे पर होते हैं। न उन्हें माँ के पंखों की सुरक्षा मिलती है और न ही माँ का दूध प्राप्त होता है। यह बात विचारणीय है कि प्रभु उनका भी पालन-पोषण करता है। इसी प्रकार पत्थर में कीड़ा छुप कर रहता है। उसके पास बाहर निकलने का कोई रास्ता भी नहीं होता कि वह खा-पी सके। भक्त धंना जी कहते हैं कि ईश्वर उसे भी ख़ुराक देता है। इसलिए हे जीव! डर या चिंता की ज़रूरत नहीं! अगर तू प्रभु-भक्ति में लग जाये तो प्रभु अपने आप ही तेरी रोटी-रोज़ी का फिक्र करता है अर्थात् हर प्रकार की प्रतिपालना करता है :

रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर
बिबहि न जानसि कोई ।।
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ
करता करै सु होई ।।१ ।।रहाउ ।।
जननी केरे उदर उदक महि
पिंडु कीआ दस दुआरा ।।
देइ अहारु अगनि महि राखै
ऐसा खसमु हमारा ।।१ ।।
कुंमी जल माहि तन तिसु बाहरि
पंख खीरु तिन नाही ।।
पूरन परमानंद मनोहर
समझि देखु मन माही ।।२ ।।
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता
ता चो मारगु नाही ।।
कहै धंना पूरन ताहू को मत रे जीअ डरांही ।।

(पन्ना ४८८)

धनासरी राग में जहाँ भक्त त्रिलोचन जी, भक्त सैण जी, भक्त पीपा जी के आरती वाले शबद हैं, वहीं अंत में भक्त धंना जी का शबद है। इसमें भक्त जी ने अपनी निर्धनता बता कर दाल, राशन, घी आदि खाद्य पदार्थ मांगे हैं। जूते व कपड़ा पहनने के लिए, सात बार खेत जोत कर बोया अन्न, दूध पीने के लिए दुधारू गाय-भैंस और सवारी के लिए सुंदर घोड़ी की माँग की है। सुशील गृहणी की भी याचना की है। भक्त धंना जी का यह भी विश्वास है कि प्रभु ''जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता'' है। आप शरीर की ख़ुराक और जीवन की नित्य इस्तेमाल की वस्तुएं की ही माँग करते हैं। इसमें से भक्त धंना जी की सादगी और निश्छलता झलकती है :

गोपाल तेरा आरता ।।
जो जन तुमरी भगति करंते
तिन के काज सवारता ।। १ ।। रहाउ ।।
दालि सीधा मागउ घीउ ।।
हमरा खुसी करै नित जीउ ।।
पन्हीआ छादनु नीका ।।
अनाजु मगउ सत सी का ।। १ ।।
गऊ भैस मगउ लावेरी ।।
इक ताजनि तुरी चंगेरी ।।
घर की गीहनि चंगी ।।
जनु धंना लेवै मंगी ।। (पन्ना ६९५)

भक्त धंना जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज शबद गुरमति सिद्धांतों की व्याख्या और जिज्ञासु जीवों के लिए परमार्थ के मार्ग का दर्शन करने के पक्ष से महत्वपूर्ण योगदान डालते हैं। भाषाई पक्ष से इन शबदों के माध्यम से आपने बहुत ही स्पष्ट-बयानी के द्वारा अपने आध्यात्मिक विचार और भाव प्रकट किये हैं। ये शबद उच्च रूहानियत को रूपमान करते हैं। आप जी की बाणी गुरमति के जिज्ञासुओं को सही दिशा प्रदान करती है।

संदर्भ-सूची :

१. भाई कान्ह सिंघ नाभा 'गुर शब्द रत्नाकर महान कोश, भाषा विभाग पंजाब, पटियाला, तीसरी छाप १९७४, पृष्ठ ६७३.

२. "Max Arthur Macauliffe fixes A.D. 1415 as the year of Dhanna's birth" (The Encyclopaedia of Sikhism, Pbi. University, Patiala 1992. Vol. I. Page 567) विस्तार के लिए देखो : "The Sikh Religion, Its Gurus, Sacred Writing and Authors", Vol. VI.

३. ज्ञानी गुरदित्त सिंघ, 'इतिहास श्री गुरु ग्रंथ साहिब (भक्त-बाणी), साहित्य प्रकाशन, चंडीगढ़, द्वितीय संस्करण, २०००, पृष्ठ २८६.

४. नाभा जी, भगतमाला, छपय ३१, हवाला 'इतिहास श्री गुरु ग्रंथ साहिब', पृष्ठ ६० और २३३.

५. परचियां श्री सैण भगत, धनासरी पत्तरा, हवाला वही, पृष्ठ २६८.

खालसा को अपराजेय बनाता है : अमृत

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

संवत् १७५६ की बैसाखी के दिन श्री अनंदपुर साहिब में परमात्मा ने स्वयं को अपने सबसे मोहक रूप में प्रकट किया था। परमात्मा का ऐसा स्वरूप इस दिन के पूर्व कभी किसी की कल्पना में भी नहीं था। शबद और शस्त्र के संयोग, प्रेम और पराक्रम के सुमेल, संयम और साहस के सम्बंध, बल और कुरबानी के समन्वय, सुविनय और स्वाभिमान के सम्मिलन से विभूषित परमात्मा कैसा होगा, इसे परमात्मा ने स्वयं खालसा में अपनी शक्ति संयोजित कर समस्त संसार को आश्चर्यचकित कर दिया था। किसी को विश्वास ही नहीं हुआ कि जिन्होंने कभी अस्त्र-शस्त्र निकट से भी नहीं देखे थे वे खालसा सजते ही रण के मैदान में जौहर दिखाने लगे थे। उनके हौसले इतने बुलंद हो गये कि संख्या में मात्र चालीस होते हुए भी दस लाख की फौज को चालीस लाख की ताकत से लड़ कर पीछे धकेलने लगे। घोड़ों की काठियों पर जंगल में रात बिताना उन्हें स्वीकार था, किन्तु अपने विश्वास और सिद्धांतों से विचलित होना नहीं। गुरु के प्रेम का रंग इतना गहरा था कि चने भी उन्हें बादाम लगते थे। जीवन के कठिनतम मोड़ पर भी परमात्मा के आभार में रहना उनका स्वभाव बन गया था। उन्हें न राज से मोह था, न खजाने से। उनके मन में परमात्मा के नाम के लिये भावना थी और परमात्मा की कृपा की आस। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का 'ज़फ़रनामा' औरंगजेब को संदेश तो था ही, संसार के लिये खालसा के चरित्र और संकल्प का घोषणा-पत्र भी था, जो खालसा को अजेय बनाता था। सन् १६९९ से आज तक सिक्खों की अपराजेयता संसार के लिये कौतूहल का विषय बनी हुई है। आम लोगों को समझना कठिन है कि कैसे सिक्ख आज संसार के कोने-कोने में जाकर बस गये हैं और सफल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कैसे वे दुर्गम स्थानों को सुगम, दुष्कर कार्यों को सहज और अपरिचित को परिचित बना लेते हैं! अहमद शाह दुर्रानी हैरान था कि सिक्खों को ताकत मिलती कहां से है। लगभग पूरे संसार पर राज्य करने वाले अंग्रेज़ भी यह समझ नहीं पाये थे और विश्व-युद्ध में सिक्ख सैनिकों की वीरता देख कर उन्हें विश्वास करना मुश्किल हो गया था। समय और अवसर आने पर सिक्खों ने शस्त्र-बल के साथ ही अपनी बौद्धिक क्षमता और उद्योगशीलता के उदाहरणों से भी विश्व को बराबर चमत्कृत किया है। जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें सिक्खों की प्रतिभा अन्य के लिये उदाहरण और प्रेरणा-स्वरूप स्थापित न हुई हो। वैसे प्रतिभा पर किसी का आधिपत्य नहीं है, किन्तु खालसा की प्रतिभा उसके नाम में ही निहित है। वह मन, वचन और

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५१-६०५३३, ८४९७८-५२८९१

कर्म से खालसा अर्थात् परमात्मा का है। परमात्मा का उस पर विशेष स्वामित्व है। परमात्मा के इस विशेष स्वामित्व के सम्मान में ही सिक्ख जहां भी है परमात्मा को अपने अंग-संग लेकर आया है। सिक्ख जहां भी गये वहां गुरुद्वारा स्थापित करने को पहले उत्सुक हुए। समय-समय पर सरकारें यह अनुमान लगाती रही हैं कि सिक्खों को शक्ति गुरुद्वारों से मिलती है। खालसा की ताकत को सिक्ख सिद्धांतों का मर्म जाने बिना समझा ही नहीं जा सकता। खालसा की साजना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने की थी। गुरु साहिब ने अपना परिचय परमात्मा के पुत्र के रूप में दिया था और कहा था कि वे परमात्मा के विशेष कार्य हेतु ही संसार में आये हैं। यह विशेष कार्य था-- धर्म की प्रतिष्ठा और संवर्धन :

मै अपना सुत तोहि निवाजा ।।
पंथ प्रचुर करबे कहु साजा ।।
जाहि तहां तै धरमु चलाइ ।।
कबुधि करन ते लोक हटाइ ।।२९।।६।।

(बचित्र नाटक)

इस महान कार्य को सम्पन्न करना मानवीय क्षमता से परे था। यह कार्य या तो परमात्मा स्वयं कर सकता था या किसी के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रयोग कर पूरा कर सकता था। परमात्मा ने इसके लिये श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को चुना और संसार में भेजा। गुरु साहिब ने इस हेतु सिक्खों में अपने रूप, अपनी शक्तियों को समाहित कर खालसा बनाया :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे महि हउं करउ निवास।। *(सरब लोह)*

खालसा अपने गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकट रूप है जो परमात्मा के सुपुत्र थे और उनकी शक्तियां लेकर संसार में आये थे। यह सच खालसा का सीधा सम्बंध परमात्मा के साथ स्थापित करता है। गुरु साहिब ने खालसा में अपना रूप समाहित करने का कोई रहस्यमयी ढंग नहीं अपनाया बल्कि प्रत्यक्षत: इसे सम्पन्न किया। खालसा का सर्जन करते हुए बैसाखी के दिन गुरु साहिब ने लोहे के बाटे में जल भर बीच में खंडा चलाते हुए गुरबाणी-- जपु साहिब, जापु साहिब, सवैये, चौपई साहिब और अनंद साहिब का पाठ किया। इन पांच बाणियों में वर्णित सिद्धांतों की शक्ति जल में समावेशित हुई तो जल अमृत बन गया। अमृत-पान करने वाले सिक्ख को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पितृत्व प्राप्त हो गया। परमात्मा की विरासत पुत्र (गुरु जी) से होती हुई पौत्र (खालसा पंथ) तक पहुंची और उसे अपार शक्तियों का स्वामी बना गई। खालसा को रूप श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने दिया, जिसे अकाल पुरख की फौज कहा जाता है। खालसा का उद्गमन भी अकाल पुरख को ही माना जाता है-- *''खालसा अकाल पुरख की फौज ।। प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज।।''*खालसा संसार की एकमात्र शक्ति है जिसे परमात्मा की शक्ति कहा गया है जो उसे अमृत-पान से प्राप्त हुई है। खंडे-बाटे का अमृत छक कर खालसा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पुत्र बनता है। खालसा प्रतिदिन गुरु-शबद का अमृत-पान कर खंडे-बाटे के अमृत-पान की प्रतिबद्धता को नई ऊर्जा प्रदान करता है। इससे कभी उसकी शक्ति का

क्षरण नहीं होता। अमृत वास्तव में सिक्ख के जीवन का केंद्र बिन्दु है, जो उसे सदैव उच्च अवस्था में बनाये रखता है, जिसे सिक्ख शब्दावली में 'चढ़दी कला' कहा गया है। संसार ने सिक्ख को जीवन के अंतिम पलों और घोर विकट स्थिति में भी चढ़दी कला में देख कर दांतों तले अंगुली दबाई है। बाबा दीप सिंघ जी का पचहत्तर वर्ष की आयु में भी सवा मन वजन का खंडा उठा कर युद्ध करना और अपने कटे शीश को हथेली पर टिका कर मीलों दूर श्री दरबार साहिब तक युद्ध करते हुए चले आना आज अविश्वसनीय लगता है, किन्तु यह इतिहास का गौरवमयी सच है। यह अमृत का ही प्रताप था। गुरसिक्ख का अमृत से श्वास-श्वास का सम्बंध है। उसके प्रात: जागने का समय अमृत बेला है-- *''अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु।।''* जिस बाणी का पाठ कर वह दिन आरंभ करता है वह बाणी भी अमृत है-- *''अंम्रितु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ।।''* गुरसिक्ख दिन-रात परमात्मा का नाम जपता है। वह भी अमृत है-- *''अंम्रितु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीऐ अंम्रितु गुरमति पाए राम।।''* उसके पास 'अमृत सरोवर' है जिसमें स्नान कर कौआ भी हंस हो जाता है। सिक्ख के पास 'अमृतसर' शहर है जो सिफती अर्थात् महानता का घर है।

खालसा का पूरा जीवन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के अधीन है। गुरु साहिब ने खालसा को जिस मर्यादा से बांधा था उसमें मात्र धर्म नहीं, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रों का समावेश था। खालसा के वैयक्तिक जीवन की मर्यादा भी गुरु साहिब ने विस्तार से बताई और सार रूप में इसे संत-सिपाही की मर्यादा कहा। ऐसी मर्यादा श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी में भी प्रकट हुई है। यह मर्यादा गुरसिक्ख को परमात्मा का दास बनाती है। खालसा के जीवन में उसकी इच्छा का कोई स्थान नहीं है, क्योंकि वह अपना सर्वस्व परमात्मा को समर्पित कर चुका है और अमृत-पान के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के घर उसका पुनर्जन्म हुआ है। यह जन्म अर्थात् जीवन गुरु साहिब का ऋण है, जिसे गुरसिक्ख अपनी प्रतिबद्धता और संकल्प से उतारने का प्रयास करता है। अपने संकल्प के लिये वह प्राण भी अर्पित करने से नहीं चूकता। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के दौरान लगे अकाली मोर्चे इसके सुंदर उदाहरण हैं। अकाली जत्थे एक बार अरदास करने के बाद आगे बढ़े, फिर पीछे मुड़ कर नहीं देखा। उन्होंने संकल्प लिया कि शांतिपूर्ण रहना है, तभी बल और सामर्थ्य होने के बावजूद अंग्रेजों के जुल्म सहे, किन्तु प्रतिकार नहीं किया और मोर्चे लगाते रहे। जैतो के मोर्चे में जब पांच सौ सिक्खों का पहला शहीदी जत्था अंग्रेजों की निर्ममता का शिकार हुआ, अंधाधुंध गोलियों से ९० शांत, अहिंसक सिक्ख शहीद हो गये और सैकड़ों सिक्ख घायल हो गये तो ब्रिटेन की संसद तक हिल गई। महात्मा गांधी ने अकालियों को पत्र लिख कर कहा कि अब जत्थे भेजना बंद कर दें। महात्मा गांधी को अकालियों की शक्ति पर भी संदेह था। अकालियों ने महात्मा गांधी के पत्र को नकार दिया और पांच-पांच सौ के शहीदी जत्थे तय किए कार्यक्रम के अनुसार भेजे जाते रहे, जो

पूरी तरह से शांत रहे। कुल १६ शहीदी जत्थे गये और मोर्चा सफल रहा। अंग्रेज शासन को सिक्खों की मांगें माननी पड़ी थीं। देश का सबसे बड़ा नेता भी सिक्ख-शक्ति को नहीं पहचान सका था। आज भी खालसा को एक आबादी के रूप में ही देखने का भ्रम पाला जाता है, जो समग्र रूप से मानवता के हित में नहीं है।

खालसा क्यों अन्य से भिन्न है, इसे समझने के लिये एक जीवन पर्याप्त नहीं है। समझने की ईमानदार इच्छा हो तो प्रतीक भी पुष्ट प्रमाण बन जाते हैं। सिक्ख के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण गुरु और गुरबाणी है। इसके बिना वह जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकता। वह प्रतिदिन अपने गुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब से हुकमनामा लेता है और उस पर चलने के संकल्प के साथ दिन आरंभ करता है। वह अपना छोटे से छोटा कार्य गुरु के आगे अरदास करने से आरंभ करता है और प्रत्येक कार्य सम्पन्न होने पर गुरु का आभार प्रकट करने के लिये अरदास करता है। अरदास अकाल पुरख का संग-साथ सुनिश्चित करती है। गुरसिक्ख अरदास के पश्चात अपने कार्य, उद्देश्य की संपन्नता अकाल पुरख पर छोड़ कर चिंताविहीन हो जाता है, क्योंकि उसे अपने उद्देश्य की प्राप्ति पर पूर्ण विश्वास होता है। परमात्मा की शरण उसे भयरहित बनाती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का बताया परमात्मा का रूप सिक्ख को खालसा बनाता है।

हुमा रा कसे सायह आयद बज़ेर ।।
बरो दसत दारद न ज़ागे दलेर ।। १६ ।।

(ज़फ़रनामा)

हुमा ऐसा पक्षी है जिसके साये में आने वाले को राजपाट प्राप्त हो जाता है। खालसा के लिये परमात्मा की शरण हुमा पक्षी के साये की तरह है। परमात्मा की कृपा, सिद्धांतों की मर्यादा और गुरु-शबद के साये में जीवन व्यतीत करना ही 'राज करेगा खालसा' है।

वास्तव में खालसा का राज अपने विकारों, अवगुणों को पराजित करने से बनता है। खालसा के अंदर का साहस विकारों को परास्त करने के पश्चात उत्पन्न हुआ साहस है। जिसके अंदर लोभ, मोह, अहंकार, काम, क्रोध की प्रबलता न हो उसे उसके पथ से डिगाना असंभव होता है। केवल वही समय और तूफान के विरुद्ध भी सहजता से चल सकता है। इसका आगाज श्री गुरु नानक साहिब ने किया था। हरिद्वार में जब हजारों लोग गंगा नदी का जल पूरब दिशा में चढ़ा रहे थे उस समय पश्चिम दिशा में जल चढ़ाने का साहस श्री गुरु नानक साहिब ही कर पाए थे। जब बाबर ने पूरे हिंदुस्तान में त्राहि- त्राहि मचा दी थी उसे चुनौती देने का साहस गुरु साहिब ने ही दिखाया था। श्री गुरु नानक साहिब का जीवन-उद्देश्य पूरा हुआ था और वे असंख्य लोगों का जीवन बदलने में सफल हुए थे। सिक्ख गुरु साहिबान के सभी संकल्प पूरे होते गये, क्योंकि वे संकल्प शुभ थे। खालसा उन शुभ संकल्पों का ही उत्तराधिकार है। वह परमात्मा से एक ही वर मांगता है कि अपने संकल्पों पर अटल रहे :

देह सिवा बर मोहि इहै
सुभ करमन ते कबहूं न टरों ।। *(दसम ग्रंथ)*

आदर्श जीवन का प्रण : पाँच ककारी रहित

*–सतविंदर सिंघ फूलपुर**

समूची कायनात में छोटी से लेकर बड़ी प्रत्येक वस्तु किसी ख़ास मर्यादा (नियम) के अधीन कार्य कर रही है। इस मर्यादा में ही ब्रह्मांड की निरंतरता गतिशील है और मर्यादा से बाहर केवल विनाश है। आग, हवा, पानी सब अपनी-अपनी मर्यादा के अंदर ही गतिशील हैं। मर्यादा से बाहरी होकर ये भयानक तबाही का कारण बन जाते हैं। मर्यादा में रहने वाले सूर्य, चंद्र करोड़ों कोस का भ्रमण करते हैं, परन्तु मर्यादा से बाहर होकर बड़े-बड़े उलकापिंड पल भर में राख हो जाते हैं।

'रहित' और 'मर्यादा' दो शब्द हैं। 'रहित' का अर्थ हैं :- किसी विधि-विधान के अधीन जीवन व्यतीत करने की दिशा, ख़ास नियम के अधीन जीवन व्यतीत करना, आध्यात्मिक दशा, ख़ास संयम में रहने की क्रिया, सिक्खी सिद्धांतों की पाबंदी, सिक्ख धर्म के नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करने की क्रिया, उन सिद्धांतों का संग्रह, जिनके अनुकूल एक अमृतधारी सिक्ख के लिए चलना लाज़िमी है।[१]

'मर्यादा' शब्द का अर्थ हैं :- रीति, रिवाज़, नियमों की पाबंदी आदि। मर्यादा का एक अन्य समानार्थी शब्द 'मयांद' (मरजाद) का अर्थ है-- चिह्न अथवा निशान, सीमा, हद, समाज अथवा राज द्वारा स्थापित नियम।[२]

किसी ख़ास रहित मर्यादाबद्ध जीवन जीने की युक्ति ने ही आदि मानव को सभ्यक मानव के पद तक पहुँचाया। मानव के जीवन की मर्यादा ही इसे समस्त योनियों (जन्मों) में से सर्वोच्चता प्रदान करती है। धार्मिक जीवन का असली आधार ही मर्यादा है। इसलिए प्रत्येक धर्म ने अपने पैरोकारों के लिए जीवन जीने की कुछ ख़ास मर्यादाएं निश्चित कीं[३], मगर वे मर्यादा का कोई आदर्श रूप निर्धारित न कर सके, जिस कारण मानवता खोखले कर्मकांडों में फंस कर पतन की तरफ जाती रही। श्री गुरु नानक पातशाह के आगमन के समय भारत की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक तस्वीर जो सामने आती है, वह मर्यादा से विहीन अशिष्ट समाज की तस्वीर है।

श्री गुरु नानक साहिब ने आदर्श मानव और आदर्श समाज की संरचना के लिए आंतरिक (आत्मिक) रहित मर्यादा निश्चित की। शेष गुरु साहिबान ने श्री गुरु नानक साहिब के इस मिशन को आगे बढ़ाया। गुरु साहिबान का मनोरथ था कि मनुष्य का जीवन गुरमति रहित में आकर संवर जाये।

इस आत्मिक/व्यवहारिक रहित का वर्णन

*संपादक, गुरमति प्रकाश एवं गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९९१४४-१९४८४

गुरबाणी और भाई गुरदास जी की वारों में व्यापक रूप में मिलता है।

गुरसिक्ख के लिए तो गुरबाणी का एक-एक शब्द रहित (आचरणवली) है। गुरसिक्ख ने इसके अनुसार जीवन-यापन कर अपने जीवन को विकार-रहित एवं अमृतमयी बनाना है। श्री गुरु अरजन देव जी पातशाह का बड़ा सुंदर वचन है :

रहत रहत रहि जाहि बिकारा ।।
गुर पूरे कै सबदि अपारा ।। (पन्ना २९५)

अर्थात् पूर्ण गुरु के अपार वचनों की रहित में जो रहेगा उसके सभी विकार ख़त्म हो जाएंगे। पूर्ण गुरु के वचनों की रहित का हवाला श्री गुरु रामदास जी के एक पवित्र शबद *''गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै''* में मिलता है, जिसमें गुरसिक्ख की नित्य कर्म-सारिणी को बड़े सुंदर ढंग के साथ बयान किया गया है। भाई गुरदास जी ने इसी शबद के भाव को अपनी ४०वीं वार की ११वीं पउड़ी में अति भावपूर्ण ढंग के साथ बयान किया है कि :

गुरु का सिक्ख प्रतिदिन सुबह उठ कर अमृत बेला में स्नान करता है। फिर वह गुरु के वचन (गुरबाणी) पढ़ कर धरमसाल (गुरुद्वारे) जाता है। साधसंगत में जाकर वह गुरबाणी का कीर्तन बड़े प्रेम से सुनता है। मन के संशय का निवारण कर वह गुरसिक्खों की सेवा करता है। धर्म की कमाई (खुद किया गया श्रम) कर वह अपनी उपजीविका चलाता है और उस कमाई में से कड़ाह प्रशाद लाकर साधसंगत में बाँटता है। पहले वह कड़ाह प्रशाद गुरसिक्खों को देता है, तत्पश्चात् जो शेष रहे, उसे स्वयं खाता है। . . . ऐसा गुरमुख गुरु जी द्वारा संचालित सत्य मार्ग पर चलता है।

गुरु के प्यारे गुरसिक्ख इसी रहित वाले जीवन की ख्वाहिश के लिए रोज़ाना की अरदास में गुरु से नाम, दान, स्नान की याचना करते हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर नानक निर्मल पंथ की संपूर्णता खालसा पंथ के रूप में करनी थी। देहधारी गुरु की परंपरा सदा के लिए ख़त्म कर 'ग्रंथ' और 'पंथ' को गुरुता सौंपनी थी, इसलिए अब आंतरिक रहित के साथ-साथ जत्थेबंदी की बाहरी रहित मर्यादा निश्चित करनी भी अत्यंत ज़रूरी थी। दशमेश पिता जी ने ''धरम परचुर करबे कहु साजा'' वाला मिशन अब विशुद्ध जीवन वाले धर्मपरायण, निर्मलचित्त, कथनी के पूरे, करनी के सूरे, जांबाज संत-सिपाहियों की जत्थेबंदी के हवाले करने का फ़ैसला कर लिया था। खालसा सर्जना में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य ऐसे मनुष्यों की जत्थेबंदी स्थापित करना था जो सिक्खी के आदर्श के अनुसार रूहानी ज़िंदगी में संत हो और सांसारिक जीवन में निष्काम सेवक, जो भले लोगों के रक्षक व सहायक हों और उनके दुख-निवारण के लिए दुष्ट-संहार करने का यत्न करें, ताकि आम जनता अमन-शांति का जीवन जी सके।[४]

इसके लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने

१६९९ ई. की बैसाखी को श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर मानवता को नये सिरे से अपनी तकदीर बनाने का मौका प्रदान किया। लोगों के मन में से ऊँच-नीच, जात-पांत की भिन्नताओं को दूर कर उनमें आज़ादी और स्वाभिमान वाला जीवन जीने की इच्छा भरी। ऐसा आदर्श सामाजिक संगठन (खालसा पंथ) कायम किया गया जिसने पूरे जगत को अपना समझना था, हर प्रकार की पराधीनता से मुक्त होकर जगत के रक्षक बनना था :

ख़लक खालसे की
सगल भवन चतुर दस मांहि।
खलक दुखावै जो कोई हनै खालसा तांहि।[५]

इस उद्देश्य के लिए सदियों की ग़ुलामी की जंजीरों में जकड़े व बुज़दिल हो चुके लोगों के मन में स्वाभिमान जगाने के लिए, उनमें नये जन्म का एहसास कराने के लिए पिछली कुल-नाश, कर्म-नाश, धर्म-नाश का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया। इसके बाद गुरु जी ने ख़ालसा की नयी मर्यादा स्थापित की। पाँच 'क'-- केश, कंघा, कड़ा, कृपाण, कछहिरा को हर समय अंग-संग रखने की ताकीद की "कच्छ (कछहिरा), कृपाण, केश, कंघा, कड़ा हमेशा रखने, कुठा, तंबाकू, केशों का अपमान नहीं करना . . . चोरी, ठगी, निंदा, चुगली, बखीली, नहीं करना। सिक्ख-संगत की सेवा, गरीब की पालना, गुरबाणी का उच्चारण सदा ही करते रहे। बिना अकाल पुरख और अपने इष्ट के अन्य किसी देवी-देवता, मढ़ी-मसाणी, मूर्ति के आगे सिर नहीं झुकाना, वाहिगुरु का सिमरन, सतिसंगत, शस्त्र-विद्या का अभ्यास नित्य करो।[६] गुरु जी ने ख़ालसा को चार कुरहितें[७] करने से रोका और "कंघा दोनों वक्त कर पाग चुने कर बांधई" का उपदेश दृढ़ कराया। स. केसर सिंघ छिब्बर लिखते हैं कि गुरु जी ने ख़ालसा को आचरण ऊँचा रखने और धर्म की किरत (श्रम) करने के बारे में उपदेश किया :

शराब, तमाकू, जूआ, चोरी, जारी
इन सो हेत न करै।
संगति मंदी सभ परहरे।
शबद बाणी सों प्रीति
सति संगति विचि जावै।...
नाम, दान, इसनानु, धरम दी किरत कमावै।[८]

ख़ालसे की सर्जना करना इस धरती पर संपूर्ण मानव की रचना करना था। जो संपूर्ण हो उसका अधूरा नाम स्वीकार नहीं।[९]. पुरुषों के नाम के साथ 'सिंघ' और स्त्रियों के नाम के साथ 'कौर' शब्द लगाना भी लाज़िमी करार दिया।

श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर निर्धारित हुई इस नयी खालसई रहित के हवाले सैद्धांतिक और ऐतिहासिक ग्रंथों में से व्यापक रूप में मिल जाते हैं। भाई नंद लाल जी की रचना, प्रश्नोत्तर भाई नंद लाल जी, सरब लोह ग्रंथ, रहितनामे, तनखाहनामे, प्रेम सुमारग, साखी रहित, गुर सोभा, रतनमाल, महिमा प्रकाश, गुरबिलास, गुरप्रताप सूरज ग्रंथ आदि इसके मुख्य स्रोत हैं। इसके अलावा रहित से सम्बन्धित कई हुकमनामे भी मिलते हैं। काबुल की संगत के प्रति श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का

एक हुकमनामा मिलता है, जिसमें पाँच ककारी रहित धारण करने और कुरहितों से दूर रहने के लिए बड़ा स्पष्ट उपदेश किया गया है :-

ੴ सतिगुरू जी सहाइ॥

सरबत संगत काबल गुरु रखेगा तुसां उत्ते असाडी बहुत खुशी है तुसां खंडे दा अंम्रित पंजां तों लैणा केस रक्खणे, इह असाडी मोहर है, कच्छ (कछहिरा) क्रिपान दा विसाह नहीं करना, सरब लोह दा कड़ा हत्थ रक्खणा, दोनों वक्त केसां दी पालना कंघे सउ करनी, सरबत्त संगत अभाखिआ दा कुट्ठा मास खावे नाहीं, तमाकू ना वरतन भादणी तथा कंनिआ मारन वाले सों मेल ना रक्खे, मीणे मसंदीए रामराईए की संगत ना बैसो, गुरबाणी पढ़नी, वाहुगुरू वाहुगुरू जपना, गुर की रहित रखनी ...सरबत्त संगत उपर मेरी खुशी है। (ज्येष्ठ २६, संवत् १७५६)[१०]

इस हुकमनामे से स्पष्ट है कि सिक्ख ने गुरु की ख़ुशी का पात्र बनने के लिए पाँच ककारी रहित और आंतरिक रहित के धारक बनना है।

भाई देसा सिंघ जी के रहितनामा में भाई नंद लाल जी द्वारा रहित के संबंध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से पूछे प्रश्न का एक और हवाला इस प्रकार मिलता है :-

प्रश्न करा नंद लाल तब,
सुनहु देव गुरदेव।
सभ सिखन की रहित को,
मोहि बतावहु भेव।
तब बोले गोबिंद सिंघ,
सरल गिरा गंभीर।
सभ सिखन की रहित जो,
तुमहि सुनावहुं बीर।
प्रथम रहित यह जान,
खंडे की पाहुल छकै।
सोई सिक्ख प्रधान,
अवर न पाहुल जो लए।
पांच सिंघ जो अंम्रित देवैं,
तां को सिर धर छकि पुंन लेवै।
पुन मिलि पांचहु,
रहित जु भाखहि तां को
मन मै द्रिड़ कर राखै।[११]

इस हवाले से दो नुक्ते सामने आते हैं। गुरसिक्ख के जीवन की प्रथम रहित यही है कि वह खंडे-बाटे की पाहुल छके। दूसरी पाहुल छकते समय गुरु रूप पाँच प्यारों द्वारा बताई रहित को पूरी दृढ़ता के साथ निभाए। पाँच ककारी रहित ने ख़ालसे के इख़लाक की पहचान बनना है। पाँच ककारी रहित इस बात की गवाह है कि इस शख्स से सत्, संतोष, नेकी, दया, परोपकार आदि सद्गुणों की आशा रखी जा सकती है, इसलिए पाँच ककारी रहित के धारक का यह कर्त्तव्य बनता है कि वह हर समय अपने आचरण को कलगीधर पिता जी की मर्यादा के अनुसार परखे। जो इस मर्यादा में कोताही करता है, वह पाँच ककारी रहित को तोहमत लगाने का गुनाहगार बनता है। पाँच ककारी रहित धारण कर आंतरिक रहित में भी परिपक्व रहना है।

डॉ. तारन सिंघ अमृत और पाँच ककारी रहित का आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक

अनुसरण बताते हुए लिखते हैं-- "अमृत हमारा यह उद्देश्य बनाता है कि हमने अमृत छक कर अमृत-जीवन व्यतीत करना है, जिस जीवन में से मिठास और पवित्रता निकले। हमारा विचार और व्यवहार, कथनी और रहनी मीठे व पवित्र हों। अमृत-पान करना दृढ़ प्रण है-- अमृत बेला में उठने का, स्नान करने का, नित्तनेम करने का, साधसंगत में उपस्थित होने का, सिमरन करने और कराने का। यह एलान है ककारों के माध्यम से कि अमृतधारी से एक निश्चित स्तर के व्यवहार की आशा रखी जाए। केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कछहिरा सिक्ख के आदर्शों का एलान हैं। यह अमृत की रहित का सिद्धांत ही ख़ालसे की जत्थेबंदी का चिह्न है। इसके द्वारा सिक्ख जाति तौर पर और जमाती तौर पर ऊँचा होता है। अमृत-सिद्धांत, अमृत-रहित और अमृत-नियम ही मानव को अमृतमयी जीवन जीने का उत्साह और बल प्रदान करते हैं। यह रहित ही नियम है और यह रहित ही प्रेम तक ले जाती है। अमृत-रहित निभा कर ही कोई अमृतमयी जीवन का चमत्कार देख सकता है।"[१२]

ख़ालसे की रहित के अनुसार निर्मित किए गए ख़ालसे के विशुद्ध निर्भय, निर्वैर वाले किरदार ने ही भारत को सदियों की ग़ुलामी से मुक्त कराया। भक्त पूरन सिंघ इतिहास के हवाले से गुरमति मर्यादा के विशुद्ध गुरु की बताई जीवन-युक्ति (रहित) में परिपूर्ण गुरसिक्खों की बात करते हुए लिखते हैं-- "गुरसिक्खी की मर्यादा है कि मनुष्य सुबह तीन बजे उठे, उठ कर स्नान करे, नित्तनेम की बाणियों का पाठ करे और गुरुद्वारे जाकर आसा की वार का कीर्तन सुने। भारत पर जो हमले होते रहे थे, उन हमलों के रुख को अपने शरीर की धरती में नाम-बीज बोने वाले योद्धाओं ने उल्टा काबुल की तरफ़ मोड़ दिया था। ये योद्धा वही थे जो उपरोक्त सिक्ख रहित मर्यादा के अनुसार जीवन बिताते थे। उनका मन खोटे (भौतिक) स्वाद से उठ कर आत्मा के पवित्र खुशियों वाले मंडल में चला गया था।"[१३] वास्तव में बाणी वाले मानव ही बलवान चेतना के धारक और चढ़दी कला में निवास रखने वाले हो सकते हैं। नाम-सिमरन वाले मानव ही समाज में बड़ी क्रांतियाँ ला सकते हैं।

खालसा पंथ की चढ़दी कला के लिए ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी बाणी में आत्म-रस के स्रोत नाम-सिमरन की ताकीद की है। ख़ालसे ने नाम-सिमरन द्वारा आत्मिक रस का अनुभव करना है। यह युक्ति अपना कर ख़ालसे ने गुरु और परमात्मा में अभेद होना है:

आतम रस जिह जानही सो है खालस देव।।
प्रभ महि मो महि तास महि रंचक नाहन भेव।।

(सरबलोह ग्रंथ)

यह आत्म-रस "मन तू जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु" और "कहु कबीर इहु राम की अंसु" के ज्ञान का एहसास है। यह ज्ञान उच्च इख़लाक का प्रतीक है। जब यह ज्ञान हो जाये फिर जीवन अनियंत्रित नहीं रहता। आत्म-रस की प्राप्ति कैसे होनी है, इस संबंध में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के वचन हैं :

अलप अहार सुलप सी निंद्रा
दया छिमा तन प्रीति।।
सील संतोख सदा निरबाहिबो
ह्वैबो त्रिगुण अतीत।।
काम क्रोध हंकार लोभ हठ
मोह न मन सिउ लयावै।।
तब ही आतम तत को दरसै
परम पुरख कहि पावै।। (दसम ग्रंथ)

आत्म-तत्व की पहचान के लिए ख़ालसे ने केवल और केवल परम पुरुष, जाग़त ज्योति एक अकाल पुरख का पूजक बनना है :

जागति जोत जपै निस बासुर
एक बिना मन नैक न आनै।।
पूरन प्रेम प्रतीत सजै
ब्रत गोर मड़ी मट भूल न मानै।।
तीरथ दान दइआ तप संजम
एक बिना नह एक पछानै।।
पूरन जोत जगै घट मै
तब खालसा ताहि नखालस जानै।। (दसम ग्रंथ)

इस सवईए में ख़ालसे की चार रहितें बताईं गई हैं :-

१. खालसे ने जाग़त जोति (अकाल पुरख) की पूजा करनी है।

२. खालसे ने कब्रों, मढ़ियों, मठों आदि की पूजा में विश्वास नहीं रखना।

३. हर प्रकार के कर्म-कांडों से परहेज़ करना है।

४. प्रेमा-भक्ति (वाहिगुरु के सिमरन) द्वारा परमयोति को अनुभव करना है।

इस आदर्श के अनुसार जीवन जीने वाला ही रहितवान खालसा हो सकता है।

गुरु जी ने ख़ालसे की रहित निर्धारित कर यह भी कहा कि जब तक मेरा खालसा न्यारा रहेगा, रहित का धारक रहेगा, तब तक ही उसे मेरी प्रतीति हासिल होगी :

जब लग खालसा रहै निआरा।।
तब लग तेज दीओ मै सारा।।
जब इह गहै बिपरन की रीति।।
मै न करउ इन की प्रतीत।। (सरब लोह ग्रंथ)

अत: हम देखते हैं कि सिक्ख रहित मर्यादा से सम्बन्धित पुरातन और आधुनिक जितने भी स्रोत मिलते हैं सभी में अमृत बेला में उठने, नाम-सिमरन करने, गुरबाणी पढ़ने, गुरुद्वारा साहिब जाने आदि कर्मों पर अधिक ज़ोर दिया गया है। वास्तव में जीवन को स्वस्थ और आदर्शमयी बनाने के लिए इन सभी कर्मों के पीछे तगड़ा मनोवैज्ञानिक आधार है। किसी कौम के पैरोकारों के कर्मों (कार्यों) और व्यवहारिक जीवन से उस कौम का आचरण पहचाना जाता है। मानव के कर्म मन-आश्रित हैं। मन की मूल प्रवृत्ति को गुरबाणी में चंचल माना गया है, जो प्राय : बुराई चाहता है और बुराई समाज का संतुलन बिगाड़ती है। चंचल मन के पीछे लग कर कर्म करने वाले मनमुखों का समूह आदर्श कौम या न्यारा पंथ नहीं हो सकता और न ही यह समाज का कुछ संवार सकता है, इसलिए गुरबाणी में गुरु-शबद के माध्यम से मन को प्रेरित कर गुरमति आशय के अनुसार चलने के लिए दृढ़ संकल्प रहने की बात की गई है। गुरबाणी के माध्यम से गुरु साहिबान की शिक्षाओं के अनुसार साधे हुए मन वाले गुरमुखों

के पंथ का जीवन-व्यवहार ही ऊँचे आदर्शों वाला हो सकता है। साधसंगत में गुरु-शब्द के माध्यम से साधे हुए मन ने ही पाँच विकारों रूपी शूरवीरों की हठीली फ़ौज के साथ जंग कर कर इन्हें पराजित करना है। ऐसे पंथ के सत्, संतोष, दया, नेकी, परोपकार वाले निर्मल कर्म ही गुरु साहिबान के आशय वाले समाज की सृजना करने के योग्य हो सकते हैं। पाँच ककारी रहित ने उक्त सभी कर्मों के लिए सिक्खों को प्रेरणा करनी है, इसलिए जब तक सिक्ख पाँच ककारी रहित के धारक रहेंगे, तब तक ये सभी कर्म-- अमृत बेला, नितनेम, सिमरन, संगत आदि सिक्खों के जीवन का अंग बने रहेंगे और पंथ चढ़दी कला में रहेगा। ऐसे रहितवान गुरसिक्ख देश-दुनिया के जिस भी क्षेत्र में रहेंगे, मानवता का भला करेंगे, अपने गुणों की सुगन्ध से हर जगह सम्मान प्राप्त करेंगे और उन्हें कलगीधर पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रतीति हासिल रहेगी।

गुरु साहिबान की अति मेहनत का फल है यह गुरमति रहित, जिसे उन्होंने ईश्वरीय तोहफ़े के रूप में सिक्ख की झोली में डाला है।[१४]

समय और हालात के अनुसार पंथ में रहित मर्यादा के प्रति अचेतना भी आई, परन्तु सिक्ख पंथ की सिरमौर जत्थेबंदी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रयास से 'गुरु-पंथ' ने 'गुरु-ग्रंथ' के नेतृत्व में एकत्रित होकर लगभग १४ वर्ष की सख्त मेहनत से गुरमति सिद्धांतों की रौशनी में सिक्ख रहित मर्यादा तैयार की। यह प्रत्येक गुरुद्वारा साहिब में, प्रत्येक गुरसिक्ख के घर में हो और हम इस पंथ-प्रवानित रहित मर्यादा को समर्पित होकर पंथक परिवार के सदस्य और श्री अनंदपुर साहिब के निवासी होने का मान महसूस करें।

संदर्भिका :

१. संता सिंघ तत‌ले, गुरबाणी तत्तसार, पृष्ठ १६७.
२. भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश, पृष्ठ ९५३, ९५५.
३. भगउती रहत जुगता॥. . . पृष्ठ ७१.
४. सैनापति, श्री गुर सोभा, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९८८, पृष्ठ २३, २४
५. वीर सिंघ बल, गुरकीरत प्रकाश, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, १९८६, पृष्ठ २४९
६. ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग प्रथम, भाषा विभाग पंजाब, २०११, पृष्ठ ८८२
७. (अ) केशों का अपमान।
(अ) कुठ्ठा खाना।
(इ) पर-स्त्री या पर-पुरुष का गमन (भोगना)।
(ई) तम्बाकू का इस्तेमाल करना।
८. केसर सिंघ छिब्बर, बंसावलीनामा दसां पातशाहियाँ का, (संपा.) पिआरा सिंघ पद्म, सिंघ ब्रदर्स, श्री अमृतसर, २००५, पृष्ठ १५४
८. हमारे नाम के साथ लगे सिंघ और 'कौर' शब्द कलगीधर पिता जी की हम पर कृपा है। इसके साथ गुरु पिता ने हमें सरदारी प्रदान की है। 'सिंघ' तथा 'कौर' शब्द से ही हमारी यह पहचान होती है कि हम सरवंशदानी पिता जी की संतान हैं, इसलिए 'सिंघ' कौर शब्द के बिना अपने बच्चों को छोटे नाम से पुकारना गुरसिक्खों को हरगिज़ शोभा नहीं देता। यह गुरु-पिता जी से बेमुखताई है।
१०. ज्ञानी लाल सिंघ संगरूर वाले, केस फिलासफी, पृष्ठ १६५-६६.
११. पिआरा सिंघ पद्म, रहितनामे, पृष्ठ ४८.
१२. डॉ. तारन सिंघ, सिक्ख, सिक्खी अते सिद्धांत, (प्रका.) धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, पृष्ठ १८८, १९३
१३. भगत पूरन सिंघ, पवन गुरू पाणी पिता, आल इंडिया पिंगलवाड़ा चेरिटेबल सोसायटी, पृष्ठ १४१
१४. गुरबखश सिंघ गुलशन, दर्पण सिक्ख रहित मर्यादा, २००६, पृष्ठ १९

वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ

-डॉ. परमजीत कौर*

दुर्लभ देह को प्राप्त करके नाम-सिमरन करते हुए जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति तथा परमात्मा से मिलाप ही इस जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। परमात्मा को भुलाकर माया-मोह में लिप्त जीव इस सुनहरे अवसर को व्यर्थ गंवा देता है :

— राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ।।
बिखु खावै बिखु बोली बोलै
बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ।।
(पन्ना ११२७)

— सुणि मन मित्र पिआरिआ
मिलु वेला है एह ।। (पन्ना २०)

सारा जीवन धन एकत्र करने एवं पुत्र-स्त्री, घर-बार, विषयों के रस में उलझा हुआ मनुष्य कभी शान्ति प्राप्त नहीं करता, असन्तुष्ट रहता है, अधीर रहता है, व्याकुल रहता है :

मनमुखु जगतु निरधनु है
माइआ नो बिललाइ ।।
अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ।।
सांति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ।।
सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ।।
(पन्ना १०९२)

प्रभु से वियोग ही जीव-स्त्री के दुख का कारण है :

— जो जीअ हरि ते विछुड़े
से सुखि न वसनि भैण ।।
हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ
खोजि डिठे सभि गैण ।। (पन्ना १३६)

— सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ।।
किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ।।
(पन्ना २४३)

— बाझहु पिआरे कोइ न सारे
एकलड़ी कुरलाए ।।
नानक सा धन मिलै मिलाई
बिनु प्रीतम दुखु पाए ।। (पन्ना २४३)

श्री गुरु अरजन देव जी समझा रहे हैं कि बैसाख का महीना प्रफुल्लित करने वाला होता है, मगर प्रभु-प्रेम से रहित जीव स्त्री सदा सन्तप्त रहती है :

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ
जिना प्रेम बिछोहु ।।
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ।।
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ।।
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ।।
(पन्ना १३३)

वास्तव में इन्सानी जीवन के लिए दो ही ऋतुए हैं-- नाम-सिमरन तथा नाम-हीनता। मनुष्य इनमें से जिस ऋतु के प्रभाव के अधीन जीवन व्यतीत करता है, उसके शरीर को वैसा ही सुख या दुख मिलता है। उस प्रभाव के अनुसार ही उसका शरीर चलता रहता है। ज्ञानेन्द्रियां

*६२०, गली नं. १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

बहिर्मुखी या अन्तर्मुखी हो जाती हैं। मनुष्य के लिए वही ऋतु सुन्दर है जब वह नाम-सिमरन करता है। नाम-सिमरन के बिना कोई भी ऋतु कल्याणकारी नहीं होती :

जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ।।
नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ।।
(पन्ना १२५४)

परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना जितने भी कर्म किए जाते हैं वे उच्च आत्मिक जीवन का अंग नहीं बनते :

— ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ।।
राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ।।
(पन्ना ८१०)

— छोडि जाहि से करहि पराल ।।
कामि न आवहि से जंजाल ।।
संगि न चालहि तिन सिउ हीत ।।
जो बैराई सेई मीत ।।१ ।।
ऐसे भरमि भुले संसारा ।।
जनमु पदारथु खोइ गवारा ।। (पन्ना ६७६)

प्राय : नियत किए गए धार्मिक कर्म, रस्में आदि जीव को विकारों के पंजे में से निकलने में सहायता नहीं करते, बल्कि मन में अहंकार को बढ़ाते हैं। इन फोकट कर्मों को करने से परमात्मा की प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती :

बहु करम कमावै मुकति न पाए ।।
देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ।।
बिरथा जनमु गवाइआ कपटी
बिनु सबदै दुखु पावणिआ ।। (पन्ना १२३)

प्रेम स्वरूप प्रभु को भुलाकर परेशानी ही होती है। परमात्मा के बिना कोई अन्य साथी नहीं बनता :

दयु विसारि विगुचणा
प्रभ बिनु अवरु न कोइ ।। (पन्ना १३३)

धन, पुत्र मित्र, परिवार आदि कोई सहायक नहीं बनता :

संगि न चालसि तेरै धना ।।
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ।।
सुत मीत कुटंब अरु बनिता ।।
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ।। (पन्ना २८८)

गुरु साहिब समझा रहे हैं कि जहां माता-पिता, पुत्र-मित्र सहायता नहीं कर सकते वहां प्रभु का नाम सहायक बनता है :

— जह मात पिता सुत मीत न भाई ।।
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ।। (पन्ना २६४)

— ना करि आस मीत सुत भाई ।।
ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ।।
बिनु हरि नावै को बेली नाही
हरि जपीऐ सारंगपाणी हे ।। (पन्ना १०७०)

— विणु नावै को संगि न साथी
आवै जाइ घनेरी ।।
नानक लाहा लै घरि जाईऐ
साची सचु मति तेरी ।। (पन्ना ११११)

जिनका परमात्मा के साथ प्रेम का सम्बंध बन जाता है वे लोक-परलोक में शोभा पाते हैं, सदा नाम-सिमरन में लगे रहते हैं :

प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ।।
नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ।।
वैसाखु सुहावा तां लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ।।
(पन्ना १३३)

श्री गुरु अरजन देव जी का कथन है कि प्रभु के सम्मुख प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु ! कृपा

करो कि हमारे हृदय में प्रेम का प्रवाह चलता रहे, ताकि प्रभु-मिलाप का संयोग प्राप्त हो जाए। बैसाख का महीना प्राकृतिक रूप से आह्लादित करने वाला है, लेकिन आत्मिक जीवन के मार्ग पर चलने वालों के लिए यह तभी सुहावना लगता है जब पूर्ण संत तथा सतिगुरु के साथ भेंट हो जाए तथा प्रभु-मिलाप का आनंद प्राप्त हो जाए।

इस कलियुग में परमात्मा का नाम मानों जहाज है। गुरु इस जहाज का मल्लाह है। जीव नाम-सिमरन करता हुआ गुरु के शबद में जुड़कर संसार समुद्र से पार उतर सकता है। श्री गुरु रामदाम जी का कथन है :

— हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि
खेवटु गुर सबदि तरहु ।। (पन्ना ७९९)

— कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई
किव छूटह हम छुटकाकी ।।
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा
हरि जपिओ तरै तराकी ।। (पन्ना ६६८)

परमात्मा के नाम का जाप बेड़ी है, नाम ही तुलहा है :

— माइआ मोहु बिखमु है भारी ।।
किउ तरीऐ दुतरु संसारी ।।
सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा
जपि हरि हरि पारि लंघावै जीउ ।।
(पन्ना ९९७)

— हरि हरि नामु पोतु बोहिथा
खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ ।।
(पन्ना ८३३)

जो प्रभु सारे खंडों-मंडलों का सृजनकर्त्ता है, जिस प्रभु तक इन्द्रियों की पहुंच नहीं हो सकती, उस अगम अगोचर प्रभु के साथ मिलाप नाम-सिमरन के द्वारा ही सम्भव हो सकता है। श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि जैसे मकान की छत पर कोई भी सीढ़ी के बिना नहीं चढ़ सकता वैसे ही उच्च आत्मिक ठिकाने पर रहने वाले परमात्मा तक सिमरन की सीढ़ी के बिना नहीं पहुंचा जा सकता :

— ए मन मेरिआ
बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ।।
ए मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अंबड़ै राम ।।
(पन्ना १११३)

— बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ
गुर हरि धिआन निहाल ।। २ ।।
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ।।
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ।।
(पन्ना १७)

परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना जीवन मानों एक अन्धेरी रात है। प्रभु की ज्योति के प्रकट होने पर ही यह रोशन हो सकती है। वाहिगुरु का दिन-रात सिमरन करने से अज्ञानता का अन्धकार, दुर्मति, भटकना, भ्रम, डर आदि नष्ट हो जाते हैं। नाम-सिमरन के बिना प्रभु का सामीप्य प्राप्त नहीं होता :

रैणि अंधारी निरमल जोति ।।
नाम बिना झूठे कुचल कछोति ।। (पन्ना ८३१)

जिस सिमरन की बरकत से प्रभु-प्रीति बनी रहती है, वह सिमरन ही जप, तप, व्रत तथा पूजा है :

सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा
जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ।।
बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी

एक खिन महि बिसरि सभ जाइ ।।

(पन्ना ७२०)

यदि मन नाम-सिमरन में लग जाए तो आत्मिक स्थिरता बनी रहती है। दुख, क्लेश, मोह का नाश हो जाता है :

नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ ।।
नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ।।
नाइ मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ।।
नाइ मंनिऐ सांति ऊपजै हरि मंनि वसाइआ ।।
नानक नामु रतंनु है गुरमुखि हरि धिआइआ ।।

(पन्ना १२४१)

श्री गुरु अरजन देव जी के मतानुसार संत-जनों की संगति से प्रभु का प्रेम-रंग प्राप्त किया जा सकता है :

जिसहि परापति साधसंगु ।।
तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ।। (पन्ना ११८१)

संत-जन (गुरमुख) ही प्रभु की प्राप्ति का रास्ता दिखाते हैं कि मन प्रभु को अर्पित करने से प्रभु-प्राप्ति का मार्ग आसान हो जाता है :

— मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ।।
मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पंथि जुलाईआ ।।

(पन्ना १०९८)

मन का अहंकार गुरमुखों की संगति किए बिना दूर नहीं होता :

हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ।।

(पन्ना १०९८)

जो जीव संतों-गुरमुखों की संगत में रहकर हरि-नाम का व्यापार करता है, दुनिया के झगड़े-क्लेश आदि उस पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते :

— हरि के नाम को आधारु ।।
कलि कलेस न कछु बिआपै
संतसंगि बिउहारु ।। (पन्ना ११२१)

गुरबाणी में 'संत' या 'साध' शब्द का प्रयोग किस विशेष या महान व्यक्ति के लिए किया गया है, यह जानना अत्यावश्यक है। गुरु साहिब सुचेत कर रहे हैं :

— जिना सासि गिरासि न विसरै
हरि नामां मनि मंतु ।।
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ।।

(पन्ना ३१९)

— जिना सासि गिरासि न विसरै
से पूरे पुरख परधान ।। (पन्ना ३१२)

संतों की जीवन-युक्ति सदा आत्मिक स्थिरता वाली व पवित्र होती है। वे अपने अंदर से स्वत्व-भाव नष्ट कर लेते हैं। उन्होंने गुणों-अवगुणों की परख कर ली होती है। परमात्मा का नाम-रस ही संतों के लिए सांसारिक विषय- भोगों का रस होता है। वे सदा परमात्मा के नाम-रंग में रंगे रहते हैं :

संतन कै आनंदु एहु नित हरि गुण गाए ।।

(पन्ना ८१३)

जैसे पपीहा स्वाति-नक्षत्र की वर्षा की बूंद पीकर तथा मछली पानी के साथ रहकर जीवित रहती है, वैसे ही संत-जन प्रभु के नाम-जल की बूंद पीकर ही सुखी होते हैं। वास्तविक संत वही है, जो परमात्मा को अच्छा लगता है। प्रभु संतों के साथ दिन-रात रहता है :

सोई संतु जि भावै राम ।।
संत गोबिंद कै एकै काम ।।१ ।। रहाउ ।।
संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ।।
संत कै संगि बसै दिनु राति ।। (पन्ना ८६७)

श्री गुरु अरजन देव जी ने 'सलोक सहसक्रिती' बाणी में पूर्ण पुरुष या संत के छ: लक्षणों का कथन किया है-- जो सदा प्रभु का नाम जपता है, परमात्मा में ध्यान लगाए रखता है, सुख-दुख को एक समान समझता हुआ निर्वैर तथा निर्मल जीवन व्यतीत करता है, जीवों पर दया करता हुआ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि के कुप्रभाव से मुक्त रहता है, परमात्मा की उपमा को ही अपना भोजन समझता है, माया से निर्लिप्त रहता है। ऐसा परम पुरुष दुश्मन तथा मित्र सबको एक समान समझता हुआ आचरण करता है। जिस जीव पर प्रभु कृपा करता है, उसको ऐसा स्वभाव प्राप्त होता है। जैसे-जैसे जीव गुरु-संत की संगति में बैठता है, वैसे-वैसे उस पर प्रभु के नाम का रंग चढ़ता है :

— किरपा करे जिसु पारब्रहमु
होवै साधू संगु ।।
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ
तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ।। (पन्ना ७०)

— जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु
तिनी ब्रहमु बीचारिआ जीउ ।। (पन्ना ८१)

श्री गुरु अमरदास जी के मतानुसार गुरु-संत की शरण में आए बिना कोई जीव नाम-रंग में रंगा नहीं जा सकता :

— बिनु गुर कोइ न रंगीऐ
गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ।।
गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ।।
(पन्ना ४२६)

जिस जीव के माया के बन्धन टूटने लगते हैं, उसे गुरु-संत की संगति प्राप्त होती है। जो मनुष्य प्रभु के प्रेम-रंग में रंग जाता है, उसके मन से यह रंग कभी उतरता नहीं है :

— टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ।।
जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ।।
(पन्ना २५२)

नाम-रस के आनंद में मग्न जीव का मन किसी अन्य रस से आह्लादित नहीं होता :

जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ।।
सो अन रस नाही लपटाइओ ।। (पन्ना १८६)

नाम-रस का आनंद यह है कि उस अवस्था में मन स्थिर हो जाता है। कोई चिंता मन को परेशान नहीं करती, माया का लालच नहीं रहता। मन संतुष्ट तथा प्रसन्न रहता है :

— हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ।।
बुधि प्रगास प्रगट भई
उलटि कमलु बिगसना ।। २ ।।
सीतल सांति संतोखु होइ सभ बूझी त्रिसना ।।
दह दिस धावत मिटि गए
निरमल थानि बसना ।। (पन्ना ८११)

जिस जीव को परमात्मा की कृपा से ऐसी अवस्था प्राप्त हो जाती है, मन को प्रसन्न करने वाला बैसाख का महीना उन लोगों के लिए सदा सुहावना बना रहता है। श्री गुरु अमरदास जी का कथन है :

बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ।।
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ।। १ ।।
इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ।।
हरि हरि नामु जपै दिनु राती
गुरमुखि हउमै कढै धोइ ।। (पन्ना ११७६)

श्री अनंदपुर साहिब
धार्मिक आज़ादी और मानवाधिकारों की रक्षा का प्रतीक

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

श्री अनंदपुर साहिब सिक्खी की शान, आत्माभिमान और ख़ालसयी मर्यादा का केंद्र है। इस नगर की शोभा का वर्णन करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का दरबारी कवि हंस राम कहता है कि इस नगर में चारों वर्ण और चारों आश्रम आनंद सहित जीवन बसर करते हैं। आनंदमयी धरातल होने के कारण इस नगर का नाम श्री अनंदपुर साहिब है। यहाँ के निवासी सिंघ और मसंद, जिसे भी दुखी देखते हैं, उसका दुख दूर कर देते हैं। इस नगर में धर्म के नायक और शूरवीर योद्धा साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी निवास कर रहे हैं :

चार बरण चारों जहां आस्त्रम करत अनंद।
तां को नाम अनंदपुर है अनंद को कंद।
संगत, सिंघ, मसंद सभ हेर हरै पर पीर।
तहां बसत गोबिंद सिंघ धरम धुरंतर धीर।

इस नगर की शोभा यहाँ से पैदा हुए संदेश में से प्रकट होती है। इस नगर में श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा की पराकाष्ठा और संपूर्णता के दर्शन होते हैं। ख़ालसयी रूप में चार वर्णों की एकसुरता और एकसारता, बाणी और बाणे का सुमेल, आत्मसम्मान और आत्माभिमान के लिए संघर्ष करने की वृत्ति, शक्तियों का विकेंद्रीयकरण और विकेंद्रीयकरण में से प्रभु-मुखी साझी सुर पैदा करने तथा लोकतांत्रिक संस्था के विकास ने इस नगर के सिद्धांतों को इतिहास में विशेष स्थान प्रदान किया है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से पूर्व श्री गुरु तेग़ बहादर जी के समय में इस नगर में एक ऐसी घटना घटी जिसने मानवता में विश्वास रखने वाले प्रत्येक मनुष्य का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया। यह घटना कश्मीरी पंडितों के धर्म को बचाने के लिए श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब द्वारा दी गई शहादत के माध्यम से संसार में रूपमान होती है।

सदियों के बाद भी इतिहास की ऐसी घटनाएँ उस समय अपने आप सामने आ जाती हैं, जब समाज इस प्रकार के संकट का सामना कर रहा होता है। मौजूदा समय में भारत में जो घटनाक्रम चल रहा है, उसमें एक तरफ़ भारत के मुसलमान अपने आप को असुरक्षित महसूस करने लगे हैं और दूसरी तरफ़ कश्मीर के तीन लाख से अधिक हिंदुओं को रिफ्यूजी कैंपों में रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। लगभग तीस वर्ष पूर्व विवशतापूर्वक अपना घर-बार छोड़ कर कैंपों में बैठे हिंदू भाईचारे के ये लोग अपनी पृष्टभूमि को अक्सर याद करते रहते हैं। इसी याद में से उन्हें श्री अनंदपुर साहिब की याद भी ताज़ा हो जाती है, जब उनके पूर्वज अपने धर्म की रक्षा के लिए श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की शरण में आए थे। उस समय पंडित कृपा राम के नेतृत्व में आए कश्मीरी पंडितों ने श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के सम्मुख जो विनती की थी उसे 'भट्ट वहियां' में इस

**सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला—१४७००२, फोन : ९८७२०-१४३२२*

प्रकार दर्ज किया गया है :

हाथ जोर कहियो किरपा राम दत्त ब्राहमण मट्टन ग्राम :—

हमरो बल अब रहयो नहि काई।
हे गुर तेग बहादर राई।
गज के बंधन काटन हारे।
तुम गुर नानक के हैं अवतारे।
जिम दरोपती राखी लाज।
दियो सवार सुदामै काज।
फिरत फिरत प्रभ आए थारै।
थाक परैं हउं तउं दरबारै।
सेवा हरी इम अरज़ गुजारी।
तुम कलजुग के क्रिशन मुरारी।

(शहीद बिलास, बंद ३५)

श्री गुरु तेग बहादर जी ने इस विनती पर विचार करते हुए जो निर्णय लिया उसमें से श्री अनंदपुर साहिब का संदेश और भावना प्रकट होती है। धर्म की आज़ादी, समानता वाले समाज की सृजना करना और आत्माभिमान से भरपूर जीवन बसर करने की जो चेतना नवम गुरु जी ने प्रकट की थी, उसी का विकसित रूप ख़ालसे की सर्जना में से प्रकट होता है। ख़ालसे की मर्यादा में केवल बाणी और बाणा ही शामिल नहीं था, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस बाणे को धारण करने वाला जब्र और जुल्म के विरुद्ध अपना संघर्ष हमेशा जारी रखेगा और श्री अनंदपुर साहिब के संदेश के प्रति जूझता हुआ अपना जीवन भी कुर्बान कर देगा। श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पैदा हुए ख़ालसे को विशेष गुणों का धारक होने के जो आदेश दिए गए थे, उनका वर्णन करते हुए भाई नंद लाल जी लिखते हैं :

खालसा सोइ निरधन को पालै,
खालसा सोइ दुष्ट को गालै।
खालसा सोइ नाम जप करै,
खालसा सोइ मलेछ पर चढ़ै।
खालसा सोइ नाम सिउं जोड़ै,
खालसा सोइ बंधन को तोड़े।
खालसा सोइ जो चढ़ै तुरंग,
खालसा सोइ जो करै नित जंग।
खालसा सोइ शस्त्र को धारे,
खालसा सोइ दुष्ट को मारे।

(तनखाहनामा, ५०-५४)

श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पैदा हुए ऐसे गुणों वाले ख़ालसे ने समाज में प्रेम, भाईचारा, मित्रता और सह-अस्तित्व की भावना पैदा करने के साथ-साथ आत्मसम्मान और आत्माभिमान की भावना को प्रकट करने पर ज़ोर दिया है। ख़ालसे की जीवन-जाच संघर्ष के मार्ग में से होकर गुज़रती है, जो कि धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन-मूल्यों की पुनर्स्थापित के लिए समाज में निगहबान वाली भूमिका निभाती है। माखोवाल से श्री अनंदपुर साहिब के रूप में परिवर्तित हुआ यह नगर देश-दुनिया को भाईचारक एकता पैदा करने और मानवाधिकारों की रक्षा करने के लिए हमेशा संघर्षशील रहने की प्रेरणा देता है।

इस नगर में भारत की राजनीतिक, सामाजिक हालत और धार्मिक जीवन से सम्बन्धित अक्सर विचार-चर्चा होती रही है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के नेतृत्व में होने वाले साहित्यिक और जुझारू (संघर्षशील)कार्यों में से समय के समाज का आइना नज़र आ जाता है, जो कि इस बात का प्रतीक है कि धार्मिक और राजनैतिक नेताओं द्वारा धर्म के नाम पर आम लोगों पर किये जा रहे जुल्म

को आँखें बंद कर स्वीकार नहीं किया जा सकता। गुरु जी का संघर्ष मुगलों की कट्टरपंथी सोच के विरोध का प्रकटीकरण करता है।

मुग़ल राज के समय आम लोगों के साथ- साथ अन्य धर्म के विद्वानों को किस दृष्टि के साथ देखा जा रहा था, उसकी मिसाल भाई नंद लाल जी के जीवन में से प्रकट होती है। कहा जाता है कि एक बार बादशाह औरंगजेब ने मुस्लिम विद्वानों से कुरान की एक आयत के अर्थ पूछे। कईयों ने अर्थ बताए, परन्तु बादशाह को तसल्ली न हुई। बादशाह के पुत्र शहजादा मुअज्जम ने इस आयत के अर्थ भाई नंद लाल जी से पूछ कर बताए तो बादशाह बहुत ख़ुश हुआ और उसने विद्वान को बुला कर इनाम देना चाहा। जब उसे पता चला कि यह एक हिंदू विद्वान है तो उसने आश्चर्य प्रकट किया कि अभी तक यह इसलाम के घेरे में क्यों नहीं आया। भाई नंद लाल जी बादशाह की नीयत जान कर वहाँ से सुरक्षित निकल कर श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शरण में आ गए। भाई नंद लाल जी को उस समय श्री अनंदपुर साहिब ही एक ऐसा स्वतंत्र और सुरक्षित स्थान लग रहा था, जो हुकूमत के भय से मुक्त था। यहाँ आकर उन्होंने गुरु साहिबान के प्रति श्रद्धा, विचारधारा, आत्माभिमान और ख़ालसे की रहित से सम्बन्धित जो कुछ देखा, उसे कलमबद्ध कर दिया।

भाई नंद लाल जी वाली घटना के साथ-साथ इतिहास में ऐसे अनेक प्रमाण मौजूद हैं, जिनसे मुग़ल हाकिमों की धार्मिक और राजसी नीति का ज्ञान होता है। बादशाह औरंगजेब द्वारा सरकारी तौर पर ग़ैर-मुसलमानों पर 'जज़िया कर' नामक जो विशेष टैक्स लगाया गया था, वह हाकिमों की एक ही धर्म की विशेष रूप से स्थापित वाली नीति को बयान करता था। यह एक ऐसा विशेष टैक्स था, जिसके बारे में उससे पहले मुग़ल हाकिमों ने कभी सोचा भी नहीं था। जब लोगों ने बादशाह औरंगजेब के पास यह विशेष टैक्स लगाने पर विरोध प्रकट करने की कोशिश की तो उन्हें हाथियों के पैरों तले कुचलने का हुक्म दे दिया गया और इसके साथ ही इस टैक्स की जबरन वसूली का हुक्म भी सुना दिया गया। बादशाह औरंगजेब ने ग़ैर-मुस्लिम लोगों को दबाने के लिए जो अगला कदम उठाया, वो था उनके सभ्याचारक त्योहारों को ख़त्म करना। इन त्योहारों में उससे पहले के मुग़ल शासक स्वयं भाग लेते और सभी धर्मों के लोगों को अपने-अपने धर्म के रीति-रिवाज़ों के अनुसार यह त्योहार मनाने की अनुमति थी। बादशाह औरंगजेब ने इन त्योहारों पर पाबंदी लगा दी, ताकि ग़ैर-मुस्लिम लोग एक जगह पर इकठ्ठा न हो सकें। औरंगज़ेबी विचारधारा का जो प्रभाव आम लोगों के मन में बस गया था, उसका प्रतिक्रम इतिहास की रचनाओं में से सामने आता है। स. रतन सिंघ (भंगू) बादशाह औरंगजेब की धार्मिक नीति का प्रकटीकरण करते हुए लिखता है :

हिंदो हिंदू त्रिबीज है करने,
शाहि नुरंगै यौ लिख बरने।
तुरक प्रिथमे है बाहमन करने,
और हिंदू है पाछे फरने।

श्री अनंदपुर साहिब ऐसी विचारधारा के विरोध का प्रतीक है, इसीलिए कश्मीरी पंडित श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में आए थे। गुरु जी ने निर्भय और निर्वैर भाव से उनका हाथ थामा और गुरु जी धार्मिक आज़ादी को बचाने के लिए स्वयं शहीद हो गए। चाहे गुरु जी को हिंदू

धर्म में कुछ बातें केवल व्यर्थ के कर्मकांडों के रूप में दिखाई दे रही थीं, परन्तु फिर भी वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने धर्म के अनुसार पूजा-पाठ तथा अन्य धार्मिक कार्यों की आज़ादी होनी चाहिए।

इस प्रकार गुरु साहिब ने उन दिनों में धर्म की आज़ादी की बात की, जब हुकूमत इस बारे में सुनना और सोचना भी अपराध समझती थी। वर्तमान समय में जब फिर कश्मीरी हिंदुओं को जब्र और ज़ुल्म का सामना करना पड़ा तो वे पुनः श्री अनंदपुर साहिब में आए थे। १९९५ ई. में श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब की शहादत से लगभग ३२० वर्ष बाद १५०० कश्मीरी हिंदुओं, जिनमें स्त्रियां और बच्चे भी शामिल थे, ने अपने ऊपर हो रहे अत्याचार से बचाव के लिए श्री अनंदपुर साहिब को याद किया। जब वे श्री अनंदपुर साहिब में आए तो उनके हाथों में जो बैनर पकड़े हुए थे, उन पर लिखा हुआ था-- ''गुरु तेग़ बहादर जी की कुर्बानी, याद रखेगा हिंदुस्तान।''

बड़े काफ़िले के रूप में आए शरणार्थियों ने श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब के महान बलिदान के लिए उन्हें श्रद्धाँजलि भेंट करते हुए वर्तमान समय में उन पर हो रहे ज़ुल्म को रोकने हेतु साहस और ताकत के लिए अरदास भी की। अंतर केवल इतना है कि उस समय मुगलों का राज था, परन्तु अब देश आज़ाद है और देश की आज़ादी के बाद भी जब वे इस धर्म-निरपेक्ष देश के निवासी हैं, तो उन्हें अपनी जान-माल की सुरक्षा के लिए अरदास हेतु श्री अनंदपुर साहिब आना पड़ा।

इस उपरोक्त कथन से एक और बात सामने आती है कि इतने वर्ष बाद भी वे लोग श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब द्वारा उन (हिंदुओं) की धार्मिक आज़ादी की रक्षा के लिए की गई शहादत भूले नहीं और यह याद आज भी उनके मन में समाई हुई है।

गुरु जी का महान बलिदान आज भी धर्म की उचित पटकथा को समझने वाले व्यक्तियों के लिए मार्गदर्शन का काम कर रहा है। वर्तमान समय में जब हम विभिन्न धर्मों तथा विश्वासों वाले समाज का अंग हैं और समाज को आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं, तो हम चाहते हैं कि हमें भी विकसित मुल्कों वाली सुविधाएं प्राप्त हों, हमारा देश भी आर्थिक और वैज्ञानिक तरक्की की बुलंदियों को छूए। हमारे बच्चे रोज़गार प्राप्त करने के लिए विदेश जा रहे हैं। यहीं पर ऐसा माहौल पैदा किया जाए कि हम पीढ़ियों तक इस मुल्क की उन्नति में योगदान देते रहें। हमारे लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि आपसी सदभावना, सह-अस्तित्व और सच्चाई वाला वातावरण स्थापित हो, क्योंकि धर्म के नाम पर शुरू हुआ कोई भी विवाद बड़े संकट का कारण बन सकता है और यह सदियों तक हमारे लिए पीड़ादायक साबित हो सकता है। श्री अनंदपुर साहिब में गुरु साहिबान द्वारा प्रदान किया गया धर्म का संदेश आज भी लाभदायक है, जो कि समाज की संकीर्ण विचारधारा को दूर कर प्रेम और भाईचारे वाली भावना पैदा करने, मानवधिकारों की रक्षा करने का संदेश देता है।

तख्त श्री दमदमा साहिब और बैसाखी का पर्व

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

सिक्ख संगत द्वारा नित्यप्रति की जाती अरदास में जिन पांच तख्त साहिबान का जिक्र किया जाता है, उनमें तख्त श्री दमदमा साहिब भी शामिल है। इसे सिक्ख पंथ में 'गुरु की काशी' के रूप में भी गौरव प्राप्त है। यह पावन और ऐतिहासिक स्थान जिला बठिंडा की धार्मिक व आध्यात्मिक नगरी तलवंडी साबो में स्थित है। तलवंडी साबो का सिक्ख धर्म व इतिहास के साथ घनिष्ठ संबंध तभी स्थापित हो गया था, जब सिक्ख धर्म के संस्थापक, सच्चे रहबर श्री गुरु नानक देव जी अपनी एक धार्मिक यात्रा (उदासी) के दौरान सिरसा (हरियाणा) से सुलतानपुर लोधी जाते समय इस नगरी में आए थे।

इसके बाद नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर जी भी सन् १६७४ ई. में इस पावन स्थान पर पधारे थे। खिदराणे की ढाब (श्री मुकतसर साहिब) के युद्ध के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रुपाणा होते हुए साबो की तलवंडी (श्री दमदमा साहिब) आ विराजमान हुए। दशमेश पिता जी श्री दमदमा साहिब (गुरु की काशी) में लगभग १५ माह तक रहे। भाई डल्ला जी द्वारा गुरु जी का अति सम्मान करते हुए उन्हें अपने दुर्ग में निवास करने का निवेदन किया गया। गुरु जी द्वारा जिस स्थान पर कमरकस्सा (कमरबंद) खोलकर दम लिया गया, उसका नाम 'दमदमा साहिब' प्रचलित हो गया। यहां पर दशमेश पिता जी सन् १७०५ ई. में पधारे थे। तख्त श्री दमदमा साहिब में आज भी वे दो करीर (बबूल प्रजाति से) के वृक्ष मैजूद हैं, जिनके साथ गुरु जी अपना घोड़ा बांधा करते थे। यहीं पर बाबा दीप सिंघ जी का घर भोरा साहिब (तलघर) भी मौजूद है। यहीं पर उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की प्रतिलिपियां एवं पोथियां तैयार की थीं। इस भोरा साहिब में बाबा जी के शस्त्र व पुरातन घड़ा आज भी मौजूद है।

इस क्षेत्र में उस समय पेयजल की बहुत समस्या थी, इसलिए बाबा दीप सिंघ जी ने अपने हाथों से यहां पर कुआं खुदवाया था, ताकि क्षेत्र के लोगों को पेयजल मिल सके। यह कुआं आज भी मौजूद है। आसपास के लोगों को यहां से पेयजल की आपूर्ति अब भी होती है।

'पंथ प्रकाश' के रचयिता ज्ञानी गिआन सिंघ के अनुसार तख्त श्री दमदमा साहिब तलवंडी साबो में बाबा दीप सिंघ जी द्वारा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप के चार हस्तलिखित 'उतारे' (प्रतिलिपियां) तैयार कर अन्य चार तख्त साहिबान पर भिजवाए गए।

तलवंडी साबो में तख्त श्री दमदमा साहिब की स्थापना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने स्वयं की। यहां पर प्रत्येक वर्ष तख्त श्री केसगढ़ साहिब (श्री अनंदपुर साहिब) की तरह ही खालसा पंथ के अनुयायिओं द्वारा बैसाखी का पर्व अति श्रद्धा, उल्लास तथा उत्साह के साथ मनाया जाता है। यहां के बैसाखी पर्व में शामिल होने एवं नतमस्तक होने हेतु सिक्ख संगत विदेश से, देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से भारी संख्या में पहुंचती है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यहीं पर से

*बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४११०

सिक्खों के लिए हुकमनामे भी जारी किए थे।

गुरु जी ने यहां पर विराजमान होते हुए श्री गुरु तेग बहादर जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल की और श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप की संपूर्णता के बाद बची स्याही तथा उपयोग की गई कलमों को कच्चे सरोवर में डालकर इस स्थान को विद्या के केंद्र 'गुरु की काशी' होने का फरमान जारी किया था कि यहां पर विद्या की टकसाल चलेगी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्णता की सेवा भाई मनी सिंघ जी को बख्शिश की थी। गुरु जी इस पवित्र स्थान पर बैठकर सिक्ख संगत को गुरबाणी के पठन का सही ढंग सिखलाया करते थे, गुरबाणी के अर्थों का बोध करवाया करते थे, बड़े व प्रभावशाली स्तर पर अमृत संचार करवाया करते थे। तलवंडी साबो के साथ-साथ उन्होंने भागीवांदर, कोटशमीर, जंडाली टिब्बा, टाहला साहिब, तित्तरसर, मठिआईसर, चक्क फतहि सिंघ, लवेरीसर (कच्ची भुच्चो), भागू, हाजीरतन आदि स्थानों पर भी सिक्ख धर्म का प्रचार व प्रसार किया। इन स्थानों पर कलगीधर पिता जी की याद में गुरु-घर सुशोभित हैं। इस अर्से के दौरान गुरु जी का मुख्य केंद्र श्री दमदमा साहिब ही रहा। यहीं पर गुरु जी स्वयं गुरबाणी की व्याख्या किया करते थे, अमृत-पान करवा कर आवागमन के चक्कर से मुक्त किया करते थे। उनकी कृपा से संगत को ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति हुई। उन्होंने भाई मनी सिंघ जी, बाबा दीप सिंघ जी सहित ४८ गुरसिक्खों को सिक्ख संगत को गुरबाणी के अर्थों का बोध करवाने, सिक्ख धर्म का प्रचार करने की सेवा का कार्यभार सौंपा। इस स्थान को गुरबाणी के शुद्ध व सही पठन (पाठ) तथा व्याख्या का ज्ञान प्रदान करने वाली 'टकसाल' के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त हुई। यह टकसाल दमदमी टकसाल संप्रदाय के तौर पर सिक्ख संगत में जानी व पहचानी जाती है। गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप की एक बीड़ (प्रतिलिपि) श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर साहिब में प्रकाश के लिए भाई मनी सिंघ जी को देकर भेजा था। यहां पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपूर्णता का कार्य सन् १७०५ ई. में संपूर्ण हुआ था।

इस पावन स्थान पर भाई डल्ला, जो कि क्षेत्र का चौधरी (मुखिया) था, वह अमृत-पान कर सिंघ सज गया था। बाबा बीर सिंघ और बाबा धीर सिंघ (पिता-पुत्र) सिक्खी-सिदक व दृढ़ता में गुरु जी द्वारा परख किए जाने पर सफल पाए गए थे। यह घटना भी इस स्थान से संबंधित है। फूल वंश के स. रतन तिलोक सिंघ व स. राम सिंघ ने यहीं पर दशमेश पिता जी से अमृत की दात (बख्शिश) प्राप्त की थी। इस क्षेत्र में माता सुंदरी जी एवं माता साहिब कौर जी की स्मृति में भी गुरुद्वारा साहिबान मौजूद हैं। गुरुद्वारा लिखणसर साहिब को ही 'गुरु की काशी' का आशीर्वाद प्राप्त है। गुरुद्वारा लिखणसर साहिब में हर रोज़ सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं और गुरु-घर में रखी सलेटों व रेत पर गुरमुखी लिखते हैं। उन्हें विद्या का ज्ञान प्राप्त होता है और वे विद्या के क्षेत्र में तरक्की प्राप्त करते हैं। बैसाखी पर्व में तो लाखों की संख्या में श्रद्धालु श्री दमदमा साहिब में नत्मस्तक होने के लिए आते हैं। यहां पर खालसा पंथ की रिवायतों व परम्पराओं के अनुसार बैसाखी का पर्व मनाया जाता है। गुरुद्वारा लिखणसर साहिब तख़्त श्री दमदमा साहिब के मुख्य द्वार के बिलकुल निकट स्थित है।

ऐतिहासिक साखियों के अनुसार मालवा क्षेत्र की इस धरती को कई बख्शिशें करने के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सन् १७०६ में श्री दमदमा साहिब से भारत के दक्षिण क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर गए।

साका तरनतारन साहिब : अकाली लहर का पहला शहीदी साका

*-स. हरविंदर सिंघ खालसा**

शिरोमणि अकाली दल की स्थापना १४ दिसंबर, १९२० ई. को हुई थी। शिरोमणि अकाली दल के पदाधिकारियों का चयन करने के लिए और गुरुद्वारों के प्रबंध को दुरुस्त करने के लिए सिंघों को जत्थेबंद करने हेतु २३-२४ जनवरी, १९२१ ई. को श्री अकाल तख़्त साहिब पर एक सभा का आयोजन किया गया। शिरोमणि अकाली दल की इस सभा में २४ जनवरी, १९२१ ई. को एक महिला ने तरनतारन साहिब स्थित गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब के महंतों द्वारा किए गए अत्याचार और काली करतूतों का ज़िक्र किया। उसने बताया कि एक दिन जब वह तरनतारन गुरुद्वारा साहिब गई तो पुजारियों ने उसके पुत्र के गले में पत्थर लटका कर उसे सरोवर में फेंक दिया और उसकी जवान बेटी के साथ छेड़ख़ानी की गई। एक हिंदू लड़की, जो वहाँ अकेली गई थी, को महंत के चेलों ने अपमानित किया। यह दर्दनाक वृत्तांत सुन कर संगत में जोश और रोष पैदा हुआ। कुछ सिंघ आक्रोश में आकर उसी समय तरनतारन साहिब जाने के लिए तैयार हो गए। जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर ने सिंघों को शांत किया। अकाली सिंघों ने उसी समय अरदास की और गुरुद्वारा तरनतारन साहिब के प्रबंध-सुधार के लिए नेतृत्व और सहायता माँगी।

जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर के नेतृत्व में अगले दिन ही २५ जनवरी, १९२१ ई. को २० सिंघों का जत्था सवेरे की गाड़ी से तरनतारन साहिब पहुँचा। सिंघों का जत्था गुरुद्वारा साहिब में प्रातः काल आठ बजे दाख़िल हुआ। उस समय कीर्तन हो रहा था। जत्थे के सिंघों ने दरबार साहिब में बैठ कर कीर्तन सुना।

तरनतारन साहिब के गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध श्री दरबार साहिब के सरबराह (प्रबंधकर्त्ता) के अधीन था। जिस समय जिसमें सिंघ सभा लहर चली तो कई सिंघों ने गुरुद्वारा तरनतारन साहिब के प्रबंध को सुधारने के लिए यत्न किया। भाई लछमण सिंघ (शहीद श्री ननकाणा साहिब) सन् १९२० के आख़िर में अपने स्कूल की लड़कियों का जत्था लेकर तरनतारन साहिब आए और उन्होंने दरबार साहिब के अंदर कीर्तन करना चाहा। पुजारियों ने कीर्तन करने की आज्ञा न दी और वहाँ से बाहर निकाल दिया। इसी प्रकार तरनतारन के सेवक जत्थे को ११ जनवरी, १९२१ ई. को कीर्तन करने से रोका गया। ऐसा व्यवहार सिंघ सभा

*ए-२४, करतार कालोनी, गोनिआणा रोड, बठिंडा— १५१००१, फोन : ९८१५५-३३७२५

लहर के समर्थकों तथा अन्य सिक्खों के साथ भी किया गया था। पुजारियों का व्यवहार सिक्ख पंथ और सुधारकों के विरुद्ध था। इन पुजारियों का गुंडों के साथ मेल-मिलाप था। जिस समय गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चली तो तरनतारन साहिब के पुजारियों ने डर कर मि. किंग, कमिशनर लाहौर के साथ मुलाकात की। उसने पुजारियों को समझाने की जगह, डटे रहने के लिए कहा और महंतों को बताया कि ''ज़रूरत पड़ने पर सरकार आपकी मदद करेगी।''

जिस समय जत्थे के सिंघ दरबार साहिब में बैठे कीर्तन सुन रहे थे तो सिंघों को देख कर पुजारी गुस्से में आ गए और कुछ समय में ही तलवार, कुल्हाड़ी, छवि आदि लेकर दरबार के अंदर बैठ गए, जिनकी संख्या ७० के करीब थी। कुछ समय बाद ही इन पुजारियों के आदमियों ने बोलना शुरू कर दिया। कोई बोले, टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे, टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। कोई बोले, यह सोने का मंदिर धड़ पर सिर रहने तक छोड़ने को तैयार नहीं। वे काफ़ी अनाप-शनाप बोल रहे थे। जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर ने पुजारियों की हरकतों को देखते हुए उनसे कहा कि हम आपसे कोई कब्ज़ा लेने नहीं आए, बल्कि संगत की शिकायतें बताने आए हैं, ताकि प्रबंध में सुधार किया जा सके। पुजारियों के कुछ नौजवान, जत्थे के सिंघों को गालियाँ भी निकालने लगे। वैद्य भाई मोहन सिंघ ने सभी पुजारियों को समझाया कि ''अकाली दल की तरफ से केवल सुधार का विचार है, इनमें से किसी ने पुजारी या ग्रंथी नहीं बनना और न ही कोई सेवादार बदल कर नये सेवादार लगाने हैं।'' इस प्रकार समझाने पर पुजारी-ग्रंथी कुछ सँभले। बड़ी उम्र के पुजारियों ने नौजवानों को चुप करवा कर कहा कि हम बातचीत के लिए तैयार हैं और शाम को चार बजे मिल कर बातचीत करेंगे।

दोपहर दो बजे के करीब मास्टर ईशर सिंघ, स. मताब सिंघ हेँड मास्टर श्री गुरु अरजन देव खालसा हाई स्कूल, स. बिशन सिंघ नंबरदार, स. सुंदर सिंघ मैनेजर कारख़ाना और वैद्य मोहन सिंघ, बुंगे में पहुँचे जहाँ जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर, स. दान सिंघ विछोआ, जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर, स. तोता सिंघ पिशावरी और श्री अमृतसर साहिब से आए कुछ अन्य सज्जन भी बैठे थे। विचार-चर्चा हुई कि जैसे भी हो, शान्तिपूर्वक सारा कार्य निपटाया जाए। कुछ सज्जनों ने बताया कि यहाँ के पुजारियों की नीतियाँ ठीक नहीं हैं और पुजारी ऐसे कुकर्म करते हैं जो बयान करना भी कठिन है। जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर ने कहा कि हम चाहते हैं कि शान्तिपूर्वक समझौता होकर आगे के लिए सुधार हो जाये। हम नहीं चाहते कि किसी प्रकार का कोई फ़साद हो और न ही हमारी तरफ से किसी पर हाथ उठेगा। जहाँ तक पुजारियों द्वारा धमकियां देने की बात है, हम डरते भी नहीं। अकाली दल वाले पहले ही अपना शीश गुरु-

भेंट कर चुके हैं।

पुजारियों ने बातचीत करने के लिए निहाल सिंघ, सेवा सिंघ, गुरबखश सिंघ, गुरदित्त सिंघ, तेजा सिंघ को नामज़द किया। अकालियों की तरफ से जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर, जत्थेदार करतार सिंघ झब्बर, स. बलवंत सिंघ कुल्हा, स. दान सिंघ विछोआ, हकीम बहादर सिंघ नामज़द हुए। संगत की तरफ से मास्टर ईशर सिंघ, हेंड मास्टर मताब सिंघ, स. बिशन सिंघ नंबरदार, स. सुंदर सिंघ कारख़ाने वाले और वैद्य मोहन सिंघ, शहर की तरफ से भाई जस्सा सिंघ, स. गिआन सिंघ मंडी वाले, स. धर्म सिंघ रईस उसमा और कुछ अन्य सज्जन थे, जो श्री अमृतसर साहिब से आए थे। शाम को चार बजे ढोटियां वाले बुंगे में बातचीत के उपरांत जत्थेदार तेजा सिंघ भुच्चर ने पाँच शर्तें बताईं कि अगर पुजारी सिंघ यह स्वीकार कर लें तो समझौता जल्दी हो सकता है और अकाली दल किसी अन्य जगह सुधार की सेवा के लिए चल देगा। शर्तें इस प्रकार हैं :–

१. गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के नियमानुसार हो।

२. गुरुद्वारा साहिब के प्रबंध के लिए एक स्थानीय समिति गठित की जाये, जो शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से सम्बन्धित हो।

३. कुरीतियां दूर की जाएँ।

४. गुरुद्वारा साहिब के ग्रंथी, सेवादार अमृतधारी हों।

५. जो पुजारी सिक्खी रहित (सिक्ख आचरणावली) को भंग करे, उसे संगत दंड दे।

पुजारियों के प्रतिनिधि इन शर्तों को मानने के लिए सहमत हो गए, मगर उन्होंने कहा कि हमें इस बारे में सभी भाइयों (ग्रंथी, पुजारी) के साथ परामर्श करने का मौका दिया जाये। यह कह कर वे बुंगे से बाहर आ गए। दूसरी तरफ़ पुजारियों के आदमी गुरदित्त सिंघ के मकान में इकठ्ठा होकर सिंघों पर हमला करने की तैयारियाँ कर रहे थे। उन्होंने हथियार और बारूद इकट्ठा किया हुआ था। रात्रि के साढ़े आठ बजे दो पुजारी आए और उन्होंने सिक्ख नेताओं से कहा कि सभी पुजारियों ने इकठ्ठा होकर पंथ की शर्तें स्वीकार कर ली हैं। आप जल्दी साफ़ कागज़ पर लिख लो और अंदर जाकर दस्तख़त करवा लो। स. दान सिंघ विछोआ ने कहा कि अब तक के आपके लक्षण और अंदर के समाचार सही नहीं लग रहे। महंतों ने हँस कर कहा कि इसमें कोई साजिश नहीं है। सिक्ख नेताओं ने भाई मोहन सिंघ वैद्य को भेजा कि वे तय की गई पाँचों शर्तों को साफ़ कागज़ पर लिख लाएं। वैद्य जी ने गुरुद्वारे के बाहर खड़े तहसीलदार, सर्कल इंस्पेक्टर तथा अहलकारों को इसकी सूचना भी दे दी तो तहसीलदार नवाब अब्दुल हुसैन साहिब कजलबास अति प्रसन्न हुए कि राज़ीनामा हो चला है। उन्होंने खुदा का शुक्रिया अदा किया और दुआ की कि सुलह सफल हो जाये।

दरबार साहिब के अंदर पुजारी और उनके

आदमी इकट्ठा हो गए। जत्थे के कुछ सिंघ स. बलवंत सिंघ कुल्हा और स. सरन सिंघ के साथ गुरुद्वारे के अंदर गए। हकीम बहादर सिंघ दीवान में लेक्चर दे रहा था कि पुजारियों की तरफ से एक गोला फेंका गया। चार-पांच गोले और फेंके गए। उनके फटने से कई आदमी घायल हो गए। ये गोले, ईंट और पत्थर गुरदित्त सिंघ पुजारी के मकान से फेंके गए, जहाँ पुजारियों के आदमी छिपे हुए थे। पुजारियों ने दरबार साहिब के अंदर का चिराग़ बुझा कर पर्दे गिरा दिए और पुजारियों के बंदों ने छवियों, कुल्हाड़ियों के साथ सिंघों पर हमला बोल दिया। जत्थे के सिंघ घायल होकर भी यही आवाज देते रहे कि हम दरबार साहिब के अंदर और जत्थेदार जी के आदेश के बिना हाथ नहीं उठाएंगे। मरना है, मारना नहीं। घायल लोगों ने आवाज दी तो भी जत्थेदार जी ने यही कहा कि मारना नहीं! संभलो और बाहर आ जाओ। ग्रंथी-पुजारी काम तमाम कर भाग गए। तीन जन सरोवर में तैर कर बाहर निकल गए। संगत घटना का पता चलते ही दरबार साहिब में दाख़िल हुई। दो सिंघ लहू-लुहान हुए पड़े थे। फ़र्श लहू के साथ भरा पड़ा था। वैद्य भाई मोहन सिंघ ने बाहर पुलिस के अधिकारियों को बताया तो कुछ समय बाद ही सरकारी डॉक्टर पहुँच गए और उनकी आज्ञानुसार भाई हज़ारा सिंघ अलादीनपुर, भाई ईशर सिंघ, भाई हुकम सिंघ, भाई बेला सिंघ, स. बलवंत सिंघ सूबेदार, भाई गुरबख़्श सिंघ, भाई लाभ सिंघ, स. तोता सिंघ तथा १० के करीब अन्य घायल अस्पताल पहुँच गए। तहसीलदार ने कईयों के बयान कलमबद्ध किये। इसी समय रात के बारह बजे के करीब एक पुजारी कृपा सिंघ पलंग पर बैठ कर आया जो पूरी तरह से शराब के नशे में था और कह रहा था कि मुझ पर कुल्हाड़ी के कई वार हुए हैं, परन्तु घाव कोई नज़र नहीं आ रहा था। सभी अधिकारी उसकी शराबी हालत देख कर हँसने लगे और उसके वारिस उसे वापस घर ले गए। इससे पहले नायब तहसीलदार और इंस्पेक्टर, पुजारियों के मकान पर गए। उन्होंने कोई पुजारी घायलावस्था में नहीं देखा। दूसरे दिन पुजारियों ने १३ आदमी ज़ख़्मी बना कर चारपाई पर डाल कर अस्पताल भेजे।

सिंघों ने २६ जनवरी, १९२१ ई. को गुरुद्वारा तरनतारन साहिब का प्रबंध संभाल लिया। दरबार साहिब में से ख़ून धोया गया। डिप्टी कमिशनर और सुप्रिंटेंडेंट पुलिस तरनतारन पहुँच गए। उन्होंने अकालियों के साथ हमदर्दी प्रकट की और कहा कि पुजारियों के विरुद्ध केस दर्ज करवाओ, मगर सिंघों ने उत्तर दिया-- "हम मुसीबतें सहते हुए अभी और कई गुरुद्वारों का प्रबंध-सुधार करेंगे।"

इस साके में भाई हज़ारा सिंघ अलादीनपुर २७ जनवरी को शहादत प्राप्त कर गए, जिनका अंतिम संस्कार २८ जनवरी, १९२१ ई. को किया गया। घायल भाई हुकम सिंघ वसाऊकोट

ज़िला गुरदासपुर का ४ फरवरी, १९२१ ई. निधन हो गया। ये गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर की पहली शहादतें थीं।

कांग्रेस द्वारा इस साके की पड़ताल के लिए डॉक्टर किचलू, लाला भोला नाथ और लाला गिरधारी लाल की एक समिति गठित की गई, जिसने तरनतारन साहिब जाकर पड़ताल की। इस समिति के सामने पुजारियों ने सारी बात मानी और लिखित माफीनामा पेश किया। उसमें दर्ज था–– ''हमारी भूलों को क्षमा किया जाये। अकाली हमारे विरुद्ध कोई मुकद्दमा दर्ज न कराएं!''

उस समय गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध चलाने के लिए भरे दीवान में एक पंद्रह सदस्यीय आरज़ी समिति गठित की गई, जब तक कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से पक्का प्रबंध न हो जाये। इस समिति के सदस्य थे :–

१. सरदार बलवंत सिंघ सूबेदार कुल्हा, अध्यक्ष
२. सरदार धर्म सिंघ रईस उसमा, उपाध्यक्ष
३. सरदार मताब सिंघ, हेंड मास्टर
४. सरदार बिशन सिंघ, नंबरदार
५. भाई सुंदर सिंघ, मैनेजर कारख़ाना
६. भाई संत सिंघ, सचिव सिंघ सभा
७. सरदार अमर सिंघ झबाल
८. जत्थेदार तेजा सिंघ
९. सरदार किशन सिंघ भुच्चर वाले
१०. सरदार हज़ारा सिंघ जामा राय
११. सरदार हरनाम सिंघ नौशहरा
१२. सरदार तेजा सिंघ पंडोरी
१३. वैद्य भाई मोहन सिंघ
१४. बाबा केहर सिंघ पट्टी
१५. सरदार तेजा सिंघ बुर्जवाला

ये सभी सदस्य संगत द्वारा सर्वसम्मति के साथ स्वीकार किये गए और दीवान देर रात तक चलता रहा। पुजारियों ने दफ़ा–१४५ के अधीन ज़बरदस्ती कब्ज़ा लेने के जुर्म में अकाली सिंघों के विरुद्ध केस दर्ज कराया, परन्तु ९ जुलाई, १९२१ ई. को पुजारियों की दरख़ास्त रद्द हो गई। पुजारियों ने अकालियों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज करायी हुई थी, इसलिए ज़िला सेशन जज ने पुलिस को कार्यवाही करने के लिए हुक्म दिया। अक्तूबर, १९२१ को दफ़ा–१४८, १४९, ३०४ के अधीन १६ पुजारियों और १७ अकाली सिंघों के विरुद्ध फ़र्द जुर्म लगा दिया गया। कोर्ट द्वारा ९ जनवरी, १९२२ ई. को १५ पुजारियों को तीन–तीन वर्ष कैद और एक को ५० रुपए जुर्माने की सज़ा सुनाई गई। अकाली सिंघों में से १५ को एक–एक वर्ष कैद और ५० रुपए जुर्माना लगाया गया और कोर्ट ने वैद्य भाई मोहन सिंघ व हेंड मास्टर मताब सिंघ को बरी कर दिया। सेशन जज ने पुजारियों की सज़ा ९–९ महीने और अकाली सिंघों की सज़ा ६–६ महीने कर दी।

भाई हज़ारा सिंघ अलादीनपुर का अंतिम संस्कार २८ जनवरी, १९२१ ई. को दोपहर दो बजे किया गया। गुरुद्वारा प्रबंध सुधार के लिए अकाली लहर का यह पहला शहीदी साका और पहली शहादतें थीं।

छठम पातशाह के समर्पित सिक्ख : भाई भाना जी और भाई मथरा जी

*-डॉ. राजेन्द्र सिंघ साहिल**

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहीदी जहांगीर, प्रिथीचंद तथा चंदू जैसे दुष्टों के षड्यंत्रों का नतीजा थी। गुरु साहिब की मानवीय एवं आध्यात्मिक मुहिम का ईर्ष्यालुओं ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके अंत करने का प्रयास किया। शहादत से चंद दिन पहले जब पाँचवें पातशाह लाहौर जाने लगे तो समय की नजाकत को देखते हुए उन्होंने अपने सुपुत्र (छठम गुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब) को समझाया कि अब सत्य की रक्षा-प्रेम और नम्रता से संभव न हो सकेगी, अत: स्वयं शस्त्र धारण करना और बड़ी सेना तैयार करना।

सिक्खों का शस्त्रधारी बनना : मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने गुरु-पिता की शहादत के बाद सिक्खों का नेतृत्व संभाला। ज़ालिमों के अत्याचारों का मुकाबला करने के लिए गुरु जी ने सिक्खों को शस्त्रधारी बनाने का निश्चय कर लिया। गुरुआई के समय छठम गुरु ने 'मीरी' (राजनीतिक शक्ति) तथा 'पीरी' (आध्यात्मिक शक्ति) की दो कृपाणें धारण कीं और सिक्खों को आज्ञा दी कि सभी सिक्ख शस्त्र धारण करें। अत्याचारियों का मुकाबला शस्त्र के बिना नहीं हो सकता। गुरु जी के आदेशानुसार सिक्खों को घुड़सवारी, नेज़ेबाज़ी, तीरंदाज़ी, मल्ल-अखाड़े आदि के अभ्यास कराकर सैनिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा। गुरु जी ने संगत से कहा कि यदि वे भेंटें लाना चाहते हैं तो कृपाण बरछे, घोड़े आदि लेकर आया करें। कवियों और ढाडियों से कहा गया कि वे अपनी कविताओं और वारों के माध्यम से सिक्खों के मन में वीर रस का संचार करें।

गुरु जी ने श्री अमृतसर साहिब में लोहगढ़ नामक एक किला भी तैयार करवाया। इसने सिक्खों की राजनीतिक शक्ति में विशेष वृद्धि की। श्री अकाल तख्त साहिब की स्थापना भी इस दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण क़दम था।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद, उनकी इच्छा एवं आज्ञा के अनुसार छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने सिक्खों को शस्त्रधारी बनाकर उनकी राजनीतिक चेतना को चरम पर पहुँचा दिया।

शीघ्र ही बहादुर योद्धा सिक्खों की एक बड़ी सेना तैयार-बर-तैयार हो गई। भाई बिधी

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना— १४११०१, फोन : ६२३९६-०१६४१

चंद जी, भाई जेठा जी, भाई कीरत भट्ट जी, भाई मथरा भट्ट जी, भाई नंद जी, भाई जैत जी, भाई पिराणा जी, भाई तिलोका जी, भाई साईं दास जी, भाई खेड़ा जी, भाई भगतू जी, भाई बल्लू जी, भाई अनिन्ता जी, भाई निहालू जी, भाई तखतू जी, भाई मोहन जी, भाई गोपाल जी, भाई अड्डू जी, भाई कलिआणा जी, भाई परागा जी, भाई नानू जी, भाई जगना जी, भाई सकतू जी, भाई भाना जी, भाई भकना जी आदि उनकी सेना के प्रमुख योद्धा एवं जत्थेदार थे।

इन्हीं योद्धाओं में से थे-- भाई भाना जी और भाई मथरा जी।

पहली जंग के पहले शहीद : भाई भाना जी : सिक्ख ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार भाई भाना जी इलाहाबाद के रहने वाले थे। आप आध्यात्मिक रुचियों वाले साधु-स्वभाव साधक थे। आपके विषय में लिखा गया है कि आप ब्रह्मज्ञानी थे। आत्मिक बल के साथ-साथ आपके शारीरिक बल ने आपको छठे पातशाह के अधीन एक बहादुर योद्धा एवं जत्थेदार बना दिया।

गुरु साहिब की साजी सेना द्वारा पहला बड़ा युद्ध सन् १६२८ में श्री अमृतसर साहिब के निकट लड़ा गया। हुआ यूँ कि मुगल बादशाह शाहजहाँ का शाही बाज़ एक सुरखाब पक्षी का पीछा करता हुआ सिक्खों की छावनी में आ गया। सिक्खों ने बाज़ को पकड़ लिया और पक्षी की रक्षा की। शाहजहाँ के पास शिकायत पहुँची कि '' सिक्खों ने आज बाज़ को हाथ डाला है, कल ताज़ को डालेंगे।''

शाहजहाँ ने मुखलिस खान को बड़ा लश्कर देकर हमला करने का हुक्म दिया : उधर गुरु साहिब अपनी सुपुत्री बीबी वीरो के अनंद-कारज (विवाह) की तैयारियाँ कर रहे थे। हमले की खबर सुनकर गुरु जी ने सारा परिवार निकट के एक गाँव झबाल में भेज दिया और स्वयं मैदान-ए-जंग में आ डटे।

इस युद्ध में अन्य जत्थेदारों के साथ भाई भाना जी ने भी ग़ज़ब का युद्ध किया। भाई जी का मुकाबला मुगलों के सिपहसालार शमस खान के साथ हुआ। भयानक संघर्ष के बाद भाई भाना जी ने शमस खान का सिर काट डाला। युद्ध करते-करते भाई भाना जी एक बार शत्रुओं के घेरे में आ गये। तीर-तलवार से काबू में न आता देख मुगलों ने भाई भाना जी पर गोलियाँ बरसा दीं। भाई भाना जी शहीद हो गये।

अन्तत: युद्ध में गुरु जी की विजय हुई और मुखलिस खान गुरु जी के हाथों मारा गया। गुरु जी ने झबाल जाकर चौधरी भाई लंगाह के घर बीबी वीरो का अनंद-कारज सम्पन्न कराया।

भाई भाना जी की शहादत का महत्व यह है कि जंग के दौरान शहीद होने वाले वे पहले सिक्ख थे।

छठम पातशाह के समर्पित सिक्ख : भाई मथरा जी : भाई मथरा भट्ट जी श्री गुरु

हरिगोबिंद साहिब की सेना के एक समर्पित योद्धा एवं महत्वपूर्ण जत्थेदार थे। भाई जी बालपन से ही गुरु-परिवार की सेना में थे। जब छठम पातशाह ने सशस्त्र सेना सजाने के लिए सिक्खों को सैनिक प्रशिक्षण देना शुरू किया तो भाई मथरा जी ने बढ़-चढ़ कर प्रशिक्षण में हिस्सा लिया और शीघ्र ही युद्ध-कला के सिद्धहस्त योद्धा बन गये । आपके युद्ध-कौशल और आपकी लगन से प्रभावित होकर छठम पातशाह ने आपको एक सौ सिक्खों के जत्थे का जत्थेदार नियुक्त कर दिया।

श्री अमृतसर साहिब के निकट लड़ी गई पहली जंग में भाई मथरा जी ने ग़ज़ब की वीरता दिखाई और अपनी तेग का लोहा मनवाया।

श्री हरिगोबिंदपुर का युद्ध : भाई मथरा जी के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध सन् १६३० ई. में श्री हरिगोबिंदपुर में लड़ा गया। यह छठम पातशाह का दूसरा युद्ध था। यह युद्ध २८ सितम्बर से ३ अक्तूबर तक लड़ा गया था। हुआ यूँ कि गुरु जी ने ब्यास नदी के किनारे करतारपुर के पास एक नया नगर 'श्री हरिगोबिंदपुर' बसाया था। शाहजहाँ का मालगुजार भगवान दास इससे काफी नाराज़ था। उसने गुरु जी को धमकी दी कि शहर छोड़कर चले जायें। फलस्वरूप भगवान दास की सिक्खों के साथ झड़प हो गई और इस झड़प में भगवान दास मारा गया ।

भगवान दास के पुत्र रतन चंद ने जलंधर के फौजदार अब्दुल्ला के साथ मिलकर श्री हरिगोबिंदपुर पर आक्रमण कर दिया।

भाई मथरा जी की शूरवीरता और शहादत : मुगलों के पंद्रह हजार के लश्कर का सिक्खों ने डट कर मुकाबला किया। मुगल सिपहसालार बैरम खान सारे शरीर को लोहे के मजबूत कवच से ढक कर आया। उसे गुमान था कि कोई हथियार उसके मजबूत कवच पर असर नहीं करेगा। बैरम खान का मुकाबला भाई मथरा जी से हो गया। भाई मथरा जी ने लपक कर अपना खंजर बैरम खान के ललकारने पर उसके खुले मुँह में घुसेड़ कर उसे वहीं मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद भाई मथरा जी पर इमाम बख्श ने हमला कर दिया। घमासान युद्ध में भाई मथरा जी ने इमाम बख्श को तो मारा ही, साथ स्वयं भी शहीद हो गये।

अंततः इस युद्ध में जलंधर का फौजदार अब्दुल्ला गुरु जी के हाथों मारा गया और सिक्खों की विजय हुई।

इस प्रकार भाई भाना जी और भाई मथरा जी सिक्खों की लंबी और अटूट शहीदी परंपरा के आरंभिक शहीदों में से हैं।

कविताएं

बेशकीमती है जीवन, इसे सफल बना!

-डॉ. मनजीत कौर*

सत्य की राह पर सरपट दौड़!
दुनिया की तू परवाह दे छोड़!
मन के पीछे मत तू भाग!
ज़मीर की बस, सुन ले आवाज़!
नियत हमेशा रख तू नेक!
एक प्रभु पर रहे तेरी टेक!
दौलत तू बेशक खूब कमा!
पर इसमें गलतान न हो जा!
अदब-सत्कार सबका तू कर!
दुआओं संग बस, झोली ले भर!
हक-हलाल की तू रोटी खा!
मेहनत से न कभी जी चुरा!
थोड़ा सो और थोड़ा ही खा!
बंदगी की खुराक ले बढ़ा!
जो नहीं है मिला, मत हो तंग!
कृतज्ञता से भर जीवन में रंग!
शुक्रिआ कर प्रभु का 'किश्तें' चुका!
बेशकीमती है जीवन, इसे सफल बना!

गलत सहते रहना भला, कहाँ का इंसाफ है!

गलत कहना पाप है तो, गलत सहना भी पाप है!
गलत सहते रहना भला, कहाँ का इंसाफ है!
'एक चुप, सौ सुख' का जैसे,
लद गया है ज़माना।
मन पर बोझ लादे फिरना,
यूं ही जीवन भर पछताना।
छोटे-बड़े का हमेशा, लिहाज़ तुम रखना!
पर हर बात को पहले, कसौटी पर परखना!
सब कुछ अंदर ही अंदर, दफन मत करना!
घुट-घुट कर मरने की, गुस्ताखी मत करना!
याद रखना, झूठ का कभी सहारा भी मत लेना!
झूठ के पुलंदों से अवश्य, किनारा कर लेना!
न जुल्म करना और न ही जुल्म कभी सहना।
मक्कारों की मक्कारियों से, सचेत सदा रहना।
तानों से दिए गए जख्मों को न सहना,
न सहलाना!
बड़ी तहज़ीब से गलत को,
गलत अवश्य बतलाना!
'जहाँ सच है, वहाँ रब है',
कहे सच्चा ज़माना।
सच को पाकर रब को पाना,
यही ज़िंदगी का अफसाना।

*२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३

ख़बरनामा

जब्र-ज़ुल्म के विरुद्ध डटे रहने के कारण ही सिक्ख कौम हुकूमतों को खलती है : एडवोकेट धामी

जैतो/ श्री अमृतसर साहिब : २१ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा जैतो के मोर्चे की १०० वर्षीय शताब्दी पंथक-भावना सहित मनायी गई। इस सम्बन्ध में गुरुद्वारा टिब्बी साहिब जैतो में आयोजित विशाल गुरमति समागम के दौरान बड़ी संख्या में पंथक नेताओं व जत्थेबंदियों के नुमाइंदों ने शिरकत की। श्री अखंड पाठ साहिब के भोग के पश्चात् विशाल पंडाल में आयोजित समागम में विभिन्न वक्ताओं ने संबोधित करते हुए मौजूदा समय में सिक्ख पंथ को दरपेश चुनौतियों का मुकाबला इतिहास के प्रतिनिधित्व में एकजुटता के साथ करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि जैतो का मोर्चा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के मान-सम्मान की स्थापित के लिए और सिक्खों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप के विरुद्ध कौमी जज़्बे की अद्वितीय मिसाल है। यह सिक्ख कौम के गौरवमयी इतिहास का सुनहरी पन्ना है, जिससे शिक्षा लेने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में भी सरकारों द्वारा न केवल सिक्खों के धार्मिक मसलों में हस्तक्षेप किया जा रहा है, बल्कि कौमी संस्थाओं को कमज़ोर करने की साजिशें भी रची जा रही हैं। कौमी एकता की कमी के कारण पंथ-विरोधी शक्तियां अपने मंसूबों में आगे बढ़ रही हैं, जिसके प्रति कौम को जागृत होने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम को आज के हालात का मुकाबला करने के लिए जैतो के मोर्चे से दिशा व प्रेरणा प्राप्त करनी अति आवश्यक है। उन्होंने बंदी सिंघों की रिहाई, बेअदबी के दोषियों को सज़ा और किसानी संघर्ष की बात करते हुए समूची कौम से अपील की कि वह वर्तमान समय में गुरबाणी, सिक्खी सिद्धांतों और इतिहास की रोशनी में धार्मिक एवं राजनैतिक तौर पर गतिशील हो। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में सिक्खी जज़्बे की कमी चिंता का विषय है, जिसके प्रति कौमी चिंतन ज़रूरी है। आज पुरातन सिक्खों के जीवन में से कौमी भावना की प्रेरणा प्राप्त कर सिक्खी जज़्बे, समर्पण और दृढ़ता जैसे गुणों को अपनाना समय की ज़रूरत है।

अपने संबोधन के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि सिक्खों ने न केवल अपनी कौम के लिए शहादत दी, बल्कि देश और मानवता की ख़ातिर भी अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि यही कारण था कि हुकूमतों को सिक्ख कौम हमेशा खलती रही। श्री अकाल तख़्त साहिब का सिद्धांत और सिक्ख संस्थाओं को

नुकसान पहुंचाने के मंसूबे समय-समय की सरकारों ने बनाए, परन्तु उन्हें हमेशा मुँह की खानी पड़ी। उन्होंने कहा कि सिक्ख इतिहास कौम की पीढ़ियों के लिए सदा प्रेरणा बनता रहा है और कौम जब्र-ज़ुल्म का मुकाबला पूर्ण दृढ़ता के साथ करती रही है। उन्होंने वर्तमान समय की सरकारों द्वारा सिक्ख संस्थाओं को कमज़ोर करने की नीति को नकारने के लिए कौम को अपने इतिहास से उत्साह प्राप्त करने की अपील की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सरकार नहीं चाहती कि सिक्खों की आवाज़ हक, सच के लिए उठती रहे। इसकी उदाहरण देते हुए एडवोकेट धामी ने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किसानों के हक में उठाई आवाज़ को दबाने के लिए सरकार घिनौने हथकंडे इस्तेमाल कर रही है। इसके अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा किसान संघर्ष से सम्बन्धित किये गए ट्वीट को बैन कर दिया गया। उन्होंने कहा कि ऐसी हरकतों से कौम की आवाज़ दबाई नहीं जा सकती। एडवोकेट धामी ने पश्चिमी बंगाल में सिक्ख पुलिस अधिकारी को नफ़रती हिंसा का शिकार बनाने की भी कड़ी आलोचना की। उन्होंने आज के दिन घटित साका श्री ननकाणा साहिब के शहीदों को भी याद किया।

शताब्दी समागम के अवसर पर उपस्थित शिरोमणि अकाली दल के प्रधान स. सुखबीर सिंघ बादल ने बुलंद आवाज़ में सिक्ख कौम के मसलों और माँगों की तरफ सरकारों को विशेष रूप से ध्यान देने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि खालसा पंथ की शक्ति गुरबाणी के साथ-साथ सिक्ख संस्थाएं भी हैं, लेकिन सरकारों द्वारा इन्हें निशाने पर लिया जा रहा है। सिक्ख संस्थायों को कमज़ोर करने के लिए सिक्ख चेहरों का प्रयोग सरकारों का एक पैंतरा है, जिसे पहचानने की अति आवश्यकता है। उन्होंने दिल्ली गु. प्र. कमेटी, हरियाणा गु. प्र. कमेटी और तख़्त श्री हजूर साहिब प्रशासनिक बोर्ड की उदाहरण देते हुए कहा कि सरकारी एजेंसियों का उद्देश्य सिक्खों के गुरु-घरों के प्रबंध को पंथक हाथों से छीनना है, जिससे पंथक आवाज़ को कमज़ोर किया जा सके। उन्होंने कहा कि पूरी कौम जागरूक हो और अपनी संस्थाओं की मज़बूती के लिए एकजुट होकर प्रत्येक सरकारी साजिश का मुकाबला करे। उन्होंने पश्चिमी बंगाल में सिक्ख पुलिस अधिकारी को निशाने पर लेने की निंदा करते हुए कहा कि सिक्ख देश के लिए सरहदों पर लड़ रहे हैं और आवश्यकता पड़ने पर वे देश के लिए जान कुर्बान करने से भी पीछे नहीं हटते। उन्होंने सरकारों को स्पष्ट रूप से कहा कि सिक्खों के साथ देश में बेगानेपन वाला व्यवहार बंद किया जाये।

इस दौरान तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने कहा कि जब-जब भी जब्र-ज़ुल्म की आँधी आई, तब-तब सिक्खों ने अपनी जान की परवाह किये बिना मुकाबला किया। उन्होंने कहा कि यह सिक्ख कौम की विशेषता है कि वह विपरीत हालात में भी

विचलित नहीं होती, बल्कि अपने सभ्याचार और इतिहास से दिशा प्राप्त कर आगे बढ़ती है। इसकी मिसालें इतिहास में अनेक हैं और आज भी ऐसा घटित हो रहा है। इस अवसर पर बाबा निहाल सिंघ हरिआंवेलां तरना दल वालों ने भी संबोधित करते हुए जैतो के मोर्चे के शहीदों को श्रद्धा और सम्मान भेंट किया।

इससे पूर्व ज्ञानी तरसेम सिंघ मोरांवाली के ढाडी जत्थे और भाई जोगा सिंघ भागोवालिया के कवीशरी जत्थों ने संगत को सिक्ख इतिहास के साथ जोड़ा। सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के हज़ूरी रागी जत्थों ने गुरबाणी-कीर्तन किया और भाई सरबजीत सिंघ लुधियाना वालों ने कथा-विचार प्रस्तुत की। स्टेज की सेवा प्रचारक भाई सरबजीत सिंघ ढोटियां द्वारा निभाई गई। समागम के दौरान स. सुखबीर सिंघ बादल, एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी तथा अन्य प्रमुख शख़्सियतों द्वारा सामूहिक रूप से जैतो के मोर्चे के इतिहास से सम्बन्धित पुस्तकें भी जारी कीं। इस अवसर पर जैतो के मोर्चे के शहीदों के परिवारों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सम्मान भी प्रदान किए गए।

इस अवसर पर तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, पूर्व जत्थेदार ज्ञानी गुरबचन सिंघ, श्री अकाल तख़्त साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी गुरमुख सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरबख़्श सिंघ खालसा, महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, सीनियर अकाली नेता डॉ. दलजीत सिंघ (चीमा), स. सिकंदर सिंघ मलूका, जत्थेदार गुलजार सिंघ रणीके, स. मनतार सिंघ (बराड़), स. गुरप्रताप सिंघ वडाला, स. सूबा सिंघ बादल, बाबा सेवा सिंघ खडूर साहिब वाले, बाबा जीत सिंघ जौलां वाले, बुड्ढा दल की तरफ से बाबा सरनन सिंघ मझैल, दल बाबा बिधी चंद की तरफ से बाबा नाहर सिंघ, बाबा अवतार सिंघ धत्तल, बाबा सुखविंदर सिंघ मलकपुर, बाबा सोहण सिंघ भूरीवाले, कार्यकारी कमेटी के सदस्य स. गुरप्रीत सिंघ झब्बर, स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, सदस्य भाई मनजीत सिंघ, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), स. शेर सिंघ मंड, स. केवल सिंघ बादल, बीबी गुरिंदर कौर भोलूवाला, स. अमरीक सिंघ कोटशमीर, बीबी जोगिंदर कौर, बीबी गुरप्रीत कौर, स. सतपाल सिंघ तलवंडीभाई, स. गुरमीत सिंघ बूह, स. दरशन सिंघ (बराड़), स. गुरपाल सिंघ गोरा, स. हरतेज सिंघ भुल्लर, स. जरनैल सिंघ डोगरांवाला, स. हरपाल सिंघ (जल्ला), स. सुखहरप्रीत सिंघ रोडे, स. परमजीत सिंघ खालसा, स. जगजीत सिंघ तलवंडी, स. कुलवंत सिंघ मंनण, स. सुरजीत सिंघ तुगलवाल, स. मंगविंदर सिंघ खापड़खेड़ी, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, स. अवतार सिंघ वणवाला, स. सतविंदर सिंघ टौहड़ा, स. नवतेज सिंघ काउणी, स. गुरमेल सिंघ संगतपुरा, स. हरविंदर सिंघ खालसा, स. सुरिंदर सिंघ किशनपुरा, स. गुरमिंदर सिंघ (चावला), बीबी चरनजीत कौर, महारानी परीती कौर नाभा,

कुंवर उदैप्रताप सिंघ, बाबा बीरा सिंघ, बाबा गुरभेज सिंघ, बाबा सतनाम सिंघ खापड़खेड़ी, बाबा महिंदर सिंघ, सचिव स. प्रताप सिंघ, स. बलविंदर सिंघ काहलवां, स. बिजै सिंघ, स. कुलदीप सिंघ रोडे, प्रो. सुखदेव सिंघ, स. बलविंदर सिंघ खैराबाद, स. सुखबीर सिंघ, स. मनजीत सिंघ, मैनेजर स. सुखराज सिंघ के अलावा बड़ी संख्या में संगत उपस्थित थी।

किसानों पर अत्याचार कर हरियाणा सरकार ने जलियांवाला बाग के साके की याद ताज़ा करवाई : भाई महिता, भाई चावला

श्री अमृतसर साहिब : २३ फरवरी : अपने अधिकारों के लिए प्रदर्शन कर रहे पंजाब के किसानों को हरियाणा पुलिस द्वारा पंजाब की सीमा में घुस कर, गोलियाँ मार कर और किसान नौजवानों पर घोर अत्याचार कर जलियां वाला बाग़ के साके की याद ताज़ा करवा दी है। यह बात शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता और श्री अनंदपुर साहिब से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई अमरजीत सिंघ (चावला) ने हरियाणा पुलिस द्वारा किसानों पर किये अत्याचार की घटना पर प्रतिक्रिया देते हुए कही।

भाई महिता और भाई चावला ने कहा कि पंजाब-हरियाणा सीमा को भारत-पाकिस्तान सीमा से भी अधिक सख्ती के साथ बंद कर हरियाणा सरकार केंद्र सरकार के इशारे पर पंजाब को देश से पृथक करने के मार्ग पर चल रही है। उन्होंने कहा कि पंजाब का जवान देश की सरहदों पर पहरेदारी करते हुए शहादत प्राप्त कर रहा है और देश का पेट भरने वाले पंजाब के अन्नदाता को अपनी ही सरकार पुलिस से गोलियाँ मरवा रही है, जो कि हमारे लोकतांत्रिक देश के लिए बेहद शर्मनाक है। उन्होंने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान का व्यवहार भी केंद्र सरकार के टाऊट वाला है, जो कि अपने आका अरविन्द केजरीवाल को ई. डी. के केस से बचाने के लिए किसानों की पीठ में छुरा मार रहा है। उन्होंने कहा कि पंजाब के किसान अपना हक माँग रहे हैं, परन्तु सरकार उन पर जबरदस्ती कर हिटलरशाही और नादिरशाही रवैया अपना रही है। केंद्र सरकार को पंजाब के किसानों की माँगों पर हमदर्दी के साथ विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि सरकार तानाशाही पर उतर आई है तो लोगों के पास भी वोट की बड़ी ताकत है। समय आने पर लोग भी तख़्ता पलटाने में कसर नहीं छोड़ेंगे।

जून १९८४ में भारतीय हुकूमत द्वारा दिए गए ज़ख़्म सिक्ख कौम कभी नहीं भूल सकती : एडवोकेट धामी

श्री अमृतसर साहिब : ९ मार्च : जून १९८४ में सिक्ख कौम के सर्वोच्च स्थान सचखंड श्री

हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब पर भारत की कांग्रेस सरकार द्वारा करवाए गए फ़ौजी हमले के दौरान शहीद हुए सिंघ-सिंघणियों की याद में तैयार करवाई गई शहीदी गैलरी अरदास के पश्चात् संगत को अर्पण की गई। यह शहीदी गैलरी शहीद भाई अमरीक सिंघ प्रधान ऑल इंडिया सिक्ख स्टूडेंट फेडरेशन, शहीद जनरल सुबेग सिंघ और शहीद बाबा ठारा सिंघ को समर्पित की गई है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा इस कार्य की सेवा दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा को सौंपी गई थी। इस शहीदी गैलरी में जून १९८४ के घल्लूघारे के समय श्री अकाल तख़्त साहिब की ध्वस्त हुई इमारत का मॉडल, शहीद हुए सिंघ-सिंघणियों के चित्र लगाए गए हैं। इसके साथ ही डिजिटल रूप में घल्लूघारे के इतिहास को बयान करती डाकूमेंटरी दिखाने का भी विशेष रूप से प्रबंध किया गया है। शहीदी गैलरी संगत को अर्पण करते समय सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी और श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब के जत्थेदार ज्ञानी सुलतान सिंघ, तख़्त श्री दमदमा साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा तथा पंथ की अन्य प्रमुख शख़्सियतें उपस्थित थीं।

इस अवसर पर बात करते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी रघबीर सिंघ ने कहा कि यह शहीदी गैलरी उन शहीदों की शाश्वत यादगार है, जिन्होंने जून १९८४ के समय शहादत प्राप्त की थी। उन्होंने कहा कि यह यादगार आने वाली पीढ़ी को इस घल्लूघारे के दौरान घटित हुई त्रासदी के साथ-साथ शहीद हुए सिंघ-सिंघणियों के बारे में भी जानकारी देगी। ज्ञानी रघबीर सिंघ ने कहा कि यह शहीदी गैलरी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा-स्रोत बनेगी और संगत यहाँ से कौमी जज़्बा हासिल करेगी। उन्होंने संगत से अपील की कि वह सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के दर्शन करते समय परिक्रमा में गुरुद्वारा झंडा बुंगा साहिब के निकट इस शहीदी गैलरी में भी अवश्य पधारे।

इस दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने कहा कि आज़ादी से पूर्व समय की हुकूमतों ने कई बार सिक्ख गुरुधामों पर हमले किये। आज़ाद भारत में तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर हमला करवा कर अनेक सिक्खों को शहीद किया। उन्होंने कहा कि हुकूमत द्वारा दिए गए ज़ख़्म सिक्ख कौम कभी नहीं भुला सकती। शहीदों की याद में श्री दरबार साहिब परिसर में बनाई गई यह शहीदी गैलरी संगत को हमेशा उन शहीदों की याद दिलाती रहेगी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान ने कहा कि सरकारें आज भी अप्रत्यक्ष रूप से श्री अकाल तख़्त साहिब के सिद्धांत को कमज़ोर करने के लिए यत्नशील हैं, जिसका सामना करने के लिए कौम को एकजुट होने की ज़रूरत है।

इस अवसर पर दमदमी टकसाल के प्रमुख बाबा हरनाम सिंघ खालसा ने समागम में पहुँची शख़्सियतों का धन्यवाद करने के साथ-साथ शहीदी गैलरी की सेवा में सहयोग करने वाली संगत का भी धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि इस कौमी कार्य की सेवा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा दमदमी टकसाल को सौंपी गई थी, जिसे संगत के सहयोग से पूरा किया गया है। उन्होंने कहा कि शहीदी गैलरी में घल्लूघारे के दौरान धर्म की रक्षा के लिए शहादत देने वाले बाबा जरनैल सिंघ खालसा भिंडरावाले तथा उनके साथियों के साथ-साथ निर्दोष सिंघ-सिंघणियो की तसवीरें भी लगाई गई हैं। इस दौरान कार सेवा की संपूर्णता के शुक्राने के रूप में गुरुद्वारा शहीद बाबा गुरबख़्श सिंघ जी में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए।

इस अवसर पर श्री अकाल तख़्त साहिब के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी मलकीत सिंघ, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरबख़्श सिंघ खालसा, महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य भाई मनजीत सिंघ भूराकोहना, भाई अमरजीत सिंघ (चावला), भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, भाई अजायब सिंघ अभ्यासी, कथावाचक भाई पिंदरपाल सिंघ, शहीद बाबा जरनैल सिंघ भिंडरावाले के सुपुत्र भाई ईशर सिंघ, शहीद भाई अमरीक सिंघ की सुपुत्री बीबी सतवंत कौर, शहीद जनरल सुबेग सिंघ के भाई स. बेअंत सिंघ, बाबा धरम सिंघ यूएसए, डॉ. इंदरजीत सिंघ गोगोआणी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव स. प्रताप सिंघ, ओएसडी स. सतबीर सिंघ, श्री दरबार साहिब के मैनेजर स. भगवंत सिंघ धंगेड़ा, स. सुखदेव सिंघ प्रवक्ता दमदमी टकसाल, भाई लखविंदर सिंघ यूएसए, भाई दीप सिंघ, भाई जसपाल सिंघ, भाई चरनदीप सिंघ, बाबा जगीर सिंघ, बाबा जीवा सिंघ, भाई साब सिंघ, भाई गुरचरन सिंघ, अतिरिक्त मैनेजर स. जसपाल सिंघ ढड्डे, स. निशान सिंघ जफ्फरवाल, स. बिकरमजीत सिंघ झंगी, स. अजीत सिंघ, स. सरबजीत सिंघ घुमाण आदि उपस्थित थे।

डिबरूगढ़ जेल में नज़रबंद सिक्ख नौजवानों के मामले में गठित सब-कमेटी की हुई बैठक

.श्री अमृतसर साहिब : १४ मार्च : डिबरूगढ़ जेल में नज़रबंद भाई अमृतपाल सिंघ, अन्य सिंघों और उनके परिवारों द्वारा सरकार के ख़िलाफ़ की जा रही भूख हड़ताल और उनके मामले सुलझाने के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा गठित सब-कमेटी की शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में बैठक हुई, जिसमें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरबख़्श सिंघ ख़ालसा, महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य एडवोकेट भगवंत सिंघ सिआलका, डॉ. सुखप्रीत सिंघ उद्दोके और स. अजमेर सिंघ शामिल हुए।

बैठक से सम्बन्धित जानकारी देते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कनिष्ठ उपाध्यक्ष स. गुरबख़्श सिंघ ख़ालसा और महासचिव भाई रजिंदर सिंघ महिता ने बताया कि नज़रबंद सिंघों से सम्बन्धित मामले पर गंभीरता के साथ विचार-विमर्श किया गया है। उन्होंने कहा कि मामले की गंभीरता को देखते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री श्री भगवंत मान से सब-कमेटी ने मुलाकात का समय माँगा गया था, परंतु ९ मार्च के बाद तीन बार पत्र भेजने के बावजूद भी सरकार ने कोई सार्थक उत्तर नहीं दिया। उन्होंने कहा कि आज सब-कमेटी की बैठक में महसूस किया गया कि पंजाब के मुख्यमंत्री की सिक्ख मसलों के प्रति ग़ैर संजीदा सोच अति दुर्भाग्यपूर्ण है, जो कि राज्य के हित में नहीं है। सभा के पश्चात् मीडिया को संबोधित करते हुए स. खालसा और भाई महिता ने कहा कि डिबरूगढ़ जेल असाम, श्री अमृतसर साहिब जेल पंजाब और श्री अमृतसर साहिब के विरासती मार्ग पर नज़रबंद सिंघों के पारिवारिक सदस्यों की आए दिन बिगड़ रही शारीरिक हालत को मुख्य रखते हुए विरासती मार्ग पर १७ मार्च रविवार को होने जा रहे पंथक जलसे के लिए श्री अकाल तख़्त साहिब द्वारा जारी आदेशानुसार हर प्रकार का सहयोग देने का फ़ैसला भी किया गया है।

उन्होंने बताया कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा पारित आदेश के अनुसार सब-कमेटी की तरफ से स. भगवंत सिंघ सिआलका को शामिल होने और स. सुखप्रीत सिंघ उद्दोके को स्टेज की सेवा निभाने के लिए कहा गया है। इसके अलावा पूरे कार्यक्रम को सुनियोजित ढंग से चलाने के लिए कहा गया है। उन्होंने कहा कि सिक्ख संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी पंथक मामलों में हमेशा सहयोगी रही है और भविष्य में भी सहयोग करती रहेगी। इसके अलावा नज़रबंद सिंघों के परिवारों को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से पहले की तरह नैतिक और आर्थिक सहयोग भी जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि सरकारों के सिक्ख विरोधी रवैये को ध्यान में रखते हुए कौम को जत्थेबन्दक गुटबाजी से ऊपर उठ कर आपसी एकजुटता, गंभीरता, दूरदृष्टि का प्रकटीकरण करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सब-कमेटी की अब तक हुई बैठकों और मामले की मौजूदा स्थिति के बारे में रिपोर्ट श्री अकाल तख़्त साहिब भेज दी जायेगी। बैठक के दौरान शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अपर सचिव स. गुरिंदर सिंघ मथरेवाल, इंचार्ज स. अज़ाददीप सिंघ भी उपस्थित थे।

भक्त धंना जी

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665

Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN

April 2024

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

प्रकाश-स्थान
श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी
गुरुद्वारा गुरु के महल,
श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar Sahib. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar Sahib. Editor : Satwinder Singh

Date : 7-4-2024